Finish 190 x 260 mm

समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

• अक्टूबर २०१९ • वर्ष ७० • अंक १०

मूल्य : ₹ १० प्रति, वार्षिक ₹ १००

महामानव की १५०वीं जन्म-जयंती पर विनम्र, कृतज्ञ पुष्पांजलि !

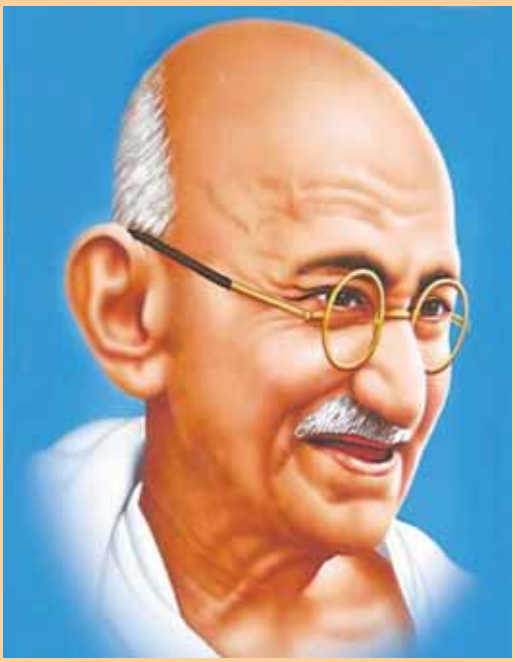

जन्म: ०२ अक्तूबर १८६९ ई. निधन: ३० जनवरी १९४८ ई.

इस अंक में –

- अध्यक्षीय : दीपावली की शुभकामनायें
- सम्पादकीय : गांधीजी का रामराज्य का सपना अधूरा
- रपट : पश्चिम बंग सम्मेलन का संगठन-विस्तार
- महात्मा गांधी की १५०वीं जयन्ती पर आलेख: गांधीजी, बंगाल और मारवाड़ी समाज, भारतीय लोकगीतों में गांधी, प्रेरणा के पथिक।

राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक १५ दिसम्बर २०१९ (रविवार) को सम्मेलन मुख्यालय सभागार (कोलकाता) में

पश्चिम बंग सम्मेलन का सघन संगठन-विस्तार अभियान

- पाँच दिनों में नौ नयी शाखाओं की स्थापना
- एक हजार से अधिक नये सदस्य बने

गत ०८ से १२ सितम्बर २०१९ तक एक पाँच दिवसीय अभियान चलाकर पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा नौ नयी शाखाओं की स्थापना की गई। (चित्र में) ०८ सितम्बर को सिलीगुड़ी में आयोजित पहली सभा को सम्बोधित करते सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं समाजचिंतक श्री सीताराम शर्मा, अन्य परिलक्षित हैं - पश्चिम बंग सम्मेलन के अध्यक्ष श्री नंदकिशोर अग्रवाल, श्री पवन जालान, श्री प्रेमचंद सुरेलिया आदि।

दीपावली की हार्दिक शुभकामनायें!

आओ अंधकार मिटाने का हुनर सीखें हम,
कि वजूद अपना बनाने का हुनर सीखें हम,
रोशनी और बढ़े, और उजाला फैले
दीप से दीप जलाने का हुनर सीखें हम!

LINC
pentonic
pentonic
₹10 per pen
AVAILABLE IN 10 COLOURS
LINC PEN & PLASTICS LIMITED | 3, ALIPORE ROAD, KOLKATA - 700 027 | +91 98365 62100 | customercare@lincpen.com

RUPA
सर्दियों में
only
TORRIDO
TORRIDO
TORRIDO
PREMIUM THERMAL
STRETCHABLE | BODY-HUGGING | ATTRACTIVE COLOURS | SOFT AND NON-ITCHY
www.rupa.co.in | SMS 'RUPA' to 53456 | Toll Free No: 1800 1235 001 | Shop Online: www.rupaonlinestore.com

With Best Compliments From:

ROAD CARGO MOVERS PVT. LTD.

Head Office : 3, Gibson Lane, 2nd Floor
Suite-211, Kolkata-700 069

Phone : 2210-3480, 2210-3485

Fax : 2231-9221

E-mail: roadcargo@vsnl.net

Branches & Associates:

GUWAHATI, SILIGURI, DURGAPUR, HALDIA, KHARAGPUR,
BALASORE, BHUBNESWAR, CUTTUCK, ICCAPURAM, VISHAKAPATNAM,
VIJAYWADA, HYDERABAD, CHENNAI, BANGALORE, COCHIN, GAZIABAD (U.P. BORDER), INDORE

समाज विकास

◆ अक्टूबर २०१९ ◆ वर्ष ७० ◆ अंक १०
◆ एक प्रति - ₹१० ◆ वार्षिक - ₹१००

अनुक्रमणिका

शीर्षक	पृष्ठ संख्या
● **चिट्ठी आई है**	५
● **सम्पादकीय : शिव कुमार लोहिया** गांधी जी का रामराज्य का सपना अधूरा	७
● **अध्यक्षीय : सन्तोष सराफ** दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ!	९
● **रपट –**	
पश्चिम बंग सम्मेलन संगठन विस्तार	१३-१५
पूर्वोत्तर सम्मेलन : राष्ट्रीय नागरिक पंजी प्रकरण	१५
● **आलेख** – जब मारवाड़ी युवकों ने क्रांतिकारियों....	१६
– दिवाली में ज्ञान और प्रेम का दीपक **सीताराम शर्मा**	१९
– गांधीजी, बंगाल और मारवाड़ी समाज	२०-२१
● महात्मा गांधी की १५०वीं जयन्ती पर	२२-२८
● राजिया रे सोरठे – **कृपाराम बारहठ**	३१
● देव-स्तुति – **डॉ. जुगल किशोर सराफ**	३२
● सम्मेलन में नए सदस्यों का स्वागत	३३-३६

स्वत्वाधिकारी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
All India Marwari Federation

प्रशासनिक एवं सम्पर्क कार्यालय : **४बी, डकबैक हाउस, ४१, शेक्सपीयर सरणी, कोलकाता - ७०००१७**
फोन : ०३३-४००४ ४०८९

पंजीकृत कार्यालय : १५२बी (द्वितीय तल), महात्मा गांधी रोड कोलकाता - ७००००७

◆ email: aimf1935@gmail.com
◆ Website : www.marwarisammelan.com

स्वत्वाधिकारी ऑल इण्डिया मारवाड़ी फेडरेशन के लिये **श्री भानीराम सुरेका** द्वारा ऑल इण्डिया मारवाड़ी फेडरेशन, ४बी, डकबैक हाउस (४ तल्ला), कोलकाता-१७ से प्रकाशित तथा सी.डी.सी. प्रिंटर्स प्रा. लि., ४५, राधानाथ चौधरी रोड, कोलकाता - ७०००१५ से मुद्रित।

◆ **प्रेरक संपादक : सीताराम शर्मा** ◆ **सम्पादक : शिव कुमार लोहिया**

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
4बी, डकबैक हाउस (चौथा तल्ला)
41, शेक्सपियर सारणी, कोलकाता-700 017

समाज से सादर निवेदन

वैवाहिक अवसर पर मद्यपान करना - कराना धार्मिक एवं सामाजिक दोनों रूप से उचित नहीं है।

प्री-वेडिंग शूट हमारी सभ्यता एवं संस्कृति के खिलाफ है।

समाजहित में इनसे परहेज करें।

निमंत्रण में ई-कार्ड को बढ़ावा दें।

चिट्ठी आई है

राजस्थानी भाषा को मान्यता

समाज विकास के सितम्बर विशेषांक में आपका पठनीय लेख 'मायड़ भासा रे बिना, क्या रो राजस्थान' पद्मश्री कन्हैया लाल जी सेठिया के आक्रोश को व्यक्त करता है। राजस्थानी भाषा को मान्यता मिलना न्यायोचित है।

– विमल चौधरी

'असमर मारवाड़ी समाज'

असमिया भाषा में छपी पुस्तक 'असमर मारवाड़ी समाज' (हिंदी में अर्थ होगा - असम का मारवाड़ी समाज) का विमोचन गत २५ अगस्त २०१९ को धेमाजी में हुआ। असम के विद्वानों, साहित्यिक एवं बुद्धिजीवी मूर्धन्य लेखकों के समय-समय पर लिखे गए लेखों का संग्रह कर उमेश जी खंडेलिया ने संग्रह एवं संपादन कर साहित्य जगत को एक बहुमूल्य रत्न दिया है। सरसरी नजर डालने पर मन में उठे उद्‌गार कुछ इस प्रकार हैं - भविष्य में यह ग्रंथ असम के मारवाड़ी समाज पर शोधकर्ताओं के लिए सहायक होगी। असम के मारवाड़ी समाज के प्रति असम के विद्वानों की, साहित्यकारों की सोच कैसी है, का उत्तर इस पुस्तक में संकलित लेखों से मिल जाता है। अपनी नसों में असम की मिट्टी की सुगंध रचा-बसाकर रखने वाले मारवाड़ी समाज के प्रति विभिन्न लेखकों के उद्‌गार बहुमूल्य है।

हमारे डिब्रूगढ़ के निवासी स्वर्गीय हरीराम खंडेलवाल के सुपुत्र उमेश जिन्होंने धेमाजी को अपनी कर्मस्थली बना रखी है, वहाँ के स्थानीय सामाजिक कार्यों के प्रति समर्पित भाव वाले कर्मठ व्यक्ति हैं। आशा है कि भविष्य में भी वे यूँ ही समाज एवं साहित्य की सेवा करते रहेंगे।

– मुरारी केडिया
('जागृति' से साभार)

IISD Edu World
Be a Leader...

SREI Foundation

"Educate Morally & Technically" — Swami Vivekananda

Swami Vivekananda SREI Merit Scholarship upto 100% Quality Education at most affordable fees

Hospitality

Hospitality Management & Culinary Arts

Newly Introduced

BTED – HND in Hospitality Management

awarded by EDEXCEL, UK (A Pearson Global Education Undertaking)

Language School

- Functional English
- Spanish
- Russian
- Chinese
- French
- Hindi
- SANSKRIT
- Spoken English
- Italian
- German
- Persian
- Bahasa (Indonesia)
- Bengali

Assistance for placement

- Complementary Spoken English
- Online Application Facility
- Regular / Weekend Classes
- AC Classrooms
- P G Accommodation

Centre for Administrative Services / WBCS

Course Director: Dr.Bikram Sarkar (IAS retd.)

- Indian Administrative Service (IAS) and Allied Services Examinations (Prelim and Main)
- WBCS (Executive) and Judicial Services Examinations (Prelim and Main)

Health Care

Preparatory course for Joint Entrance of MD/MS, DNB and MRCP (Part-I) Medicine

"Family Medicine Certificate Course (First Aid)

Business School

- AIMA recognized PGDM (2Yrs.)
- Tally ERP 9+GST
- Company Secretaryship
- Chartered Accountancy (CPT, IPCC & Final)
- Entrepreneurship Development
- Diploma in Banking and Finance

Skills

- Web Technology
- Certificate course on Theology
- Soft Skills
- Vocational & Technical Training
- Montessori Teacher Training (1 Year Diploma)
- Certificate Course on Computer Applications
- School Guide
- Bachelor Guide

IISD EDU World

IB-200/1, Sector-III, Salt Lake, Kolkata - 700 106
Ph : 2335 2378/2861, Fax : 2335 2379
E-Mail : info@iisdedu.in ● Website : www.iisdedu.in

18, Ballygunge Circular Road, Kolkata-700019
Website : www.iisdeduworld.com
Email : iisdedu@gmail.com
Ph : 46001626 / 27

सम्पादकीय

गांधी जी का रामराज्य का सपना अधूरा

महात्मा गांधी ने जीवन भर स्वराज्य की साधना की। वे कैसा स्वराज्य चाहते थे? २० मार्च १९३० को हिंदी पत्रिका 'नवजीवन' में उन्होंने लिखा था - "राज्य के कितने ही अर्थ क्यों न किये जायें, तो भी मेरे नजदीक तो उसका त्रिकाल सत्य एक ही अर्थ है - और वह है रामराज्य। यदि किसी को रामराज्य शब्द बुरा लगे तो मैं उसे धर्मराज्य कहूँगा। रामराज्य शब्द का भावार्थ है कि उसमें गरीबों की संपूर्ण रक्षा होगी। सर्व कार्य धर्मपूर्वक किये जायेंगे और लोकमत का सदा आदर किया जाएगा। सच्चा चिंतन तो वही है जिसमें रामराज्य के लिये योग्य साधन का ही उपयोग किया गया है।" याद रहे कि रामराज्य स्थापित करने के लिए जिस गुण की आवश्यकता है, वह तो सभी वर्गों के लोगों - स्त्री, पुरुष, बालक और बूढ़ों तथा सभी धर्मों के लोगों में आज भी मौजूद है। दुख मात्र इतना है कि सब कोई अभी उस हस्ती को पहचानते नहीं। सत्य, अहिंसा, मर्यादा-पालन, वीरता, क्षमा, धैर्य आदि गुणों का हममें से प्रत्येक व्यक्ति यदि चाहे तो क्या आज भी अपने जीवन में परिचय नहीं दे सकता? २२ मई १९२१ को गुजराती 'नवजीवन' में गांधी जी ने लिखा था - "कुछ लोग पूछते हैं कि जब तक राम और दशरथ फिर से जन्म नहीं लेते तब तक क्या रामराज्य मिल सकता है? हम तो राम राज्य का अर्थ स्वराज्य, धर्मराज्य, लोकराज्य करते हैं। वैसा राज्य तो तभी संभव है जब जनता धर्मनिष्ठ और वीर्यवान बने। हम तो राज्यतंत्र और राज्यनीति को बदलने के लिए प्रयत्न कर रहे हैं"। गांधीजी ने कहा, "सत्य एवं न्याय के ईश्वर के अलावा मैं और कोई ईश्वर को नहीं मानता। रामराज्य की मेरी अवधारणा एक जनतंत्र की है जिसमें सबसे नीचे तबके के नागरिक को न्याय बिना अधिक खर्च के तुरंत मिल जाय।" २ जनवरी १९३७ को हरिजन में उन्होंने लिखा कि राम राज्य में शासन नैतिकता पर आधारित होनी चाहिए। उनके अनुसार आदर्श रामराज्य में धर्म का साम्राज्य रहेगा, युवा, वृद्ध, ऊँचे-नीचे सभी प्राणियों के लिए एवं स्वयं पृथ्वी के लिए। परस्पर सर्वभौम चेतना को स्वीकारते हुए सर्वत्र धर्म व्याप्त हो, सब जगह शांति, सद्भाव एवं आनंद का साम्राज्य हो।

बाल्मिकी रामायण एवं रामचरितमानस में भी रामराज्य एवं स्वयं राजा राम के विषय में विस्तार से बताया गया है। १४ वर्ष के वनवास के वाद रामचन्द्र जी के अयोध्या आने पर दीपावली मनाई गई थी। उन्होंने शासनभार संभाल रामराज्य की स्थापना की थी। रामराज्य की स्थापना के पीछे शासक की मुख्य भूमिका थी।

रामचरितमानस में राम-भरत संवाद में भी प्रशासन के निर्णय लेने के विषय में बताया गया है:-

भरत बिनय सादर सुनिअ करिअ बिचारु बहोरि।
करब साधुमत लोकमत नृपनय निगम निचोरि।।

इसका भावार्थ है कि पहले भरत की विनती आदरपूर्वक सुन लीजिए फिर उस पर विचार कीजिए। तब साधुजन, लोकमत, राजनीति और वेदों का निचोड़ (सार) का समन्वय कर निर्णय लीजिये।

इस संदर्भ में तुलसीदास जी ने सावधान करते हुए कहा:-

तुलसी भेड़ो की धसानि, जड़ जनता सनमान।
उपजत ही अभिमान सो, खोवत मूढ़ अपान।।

अर्थात भोली जनता तो भेड़िया-धसान के समान है। एक भेड़ जहाँ गिरी, सब वहीं गिरने लगते हैं। इसलिए ऐसी जनता से मिली मान-बड़ाई भी मिथ्या है। इसे पाकर जिसके मन में अहंकार पैदा होता है वह मनुष्य मूढ़तावश अपना आपा खो बैठता है और अपने पद से गिर जाता है।

गांधी जी के राम राज्य एवं राजा राम के रामराज्य में निहित अवधारणा एक ही है। इन बातों का अध्ययन करके पता चलता है कि स्वतंत्रता के ७२ वर्षों के बाद भी हम रामराज्य से कोसों दूर हैं। वर्तमान परिस्थिति में हम न्यायप्रियता, सत्य एवं समान दृष्टि को अपनाने में असफल रहे हैं। इसके विपरीत असमानताएँ एवं विषमताएँ बढ़ती जा रही हैं। इस संबंध में गांधीजी ने २६ फरवरी १९४७ को एक प्रार्थना सभा में कहा था - "जिस आदमी की कुर्बानी की भावना अपने सम्प्रदाय से आगे नहीं बढ़ती, वह खुद तो स्वार्थी है ही, अपने सम्प्रदाय को भी स्वार्थी बनाता है।" एक साक्षात्कार में २५ मई १९४७ को उन्होंने आर्थिक असमानता को रामराज्य के लिए खतरा बताते हुए कहा था - "आज आर्थिक असमानता है। थोड़ों को करोड़ों और बाकी लोगों को सूखी रोटी भी नहीं, ऐसी भयानक असमानता में रामराज्य का दर्शन करने की आशा कभी न रखी जाय। जमींदारी, पूँजी अथवा राजसत्ता की ताकत तब तक ही रहती है जबतक आम लोगों में अपनी ताकत की समझ नहीं होती। लोग अगर रूठ गये तो राजसत्ता, पूँजीपति या जमींदार क्या कर सकता है? मेरा मानना है कि सभी सुधारों के लिए सत्य और अहिंसा ही सर्वोपरि साधन है।" अतएव रामराज्य की स्थापना के लिये चारित्रिक बल पर ध्यान देने की जरूरत है, जिसका आज सर्वथा अभाव है। हम भौतिक प्रगति की अँधी दौड़ में शामिल हैं, जिसके तहत सभी प्रकार के भेद की खाई बढ़ती जा रही है। यह कुछ भी हो सकता है पर गांधी जी के सपनों का रामराज्य नहीं है। दलीय राजनीति, भ्रष्टाचार एवं संकीर्णता एवं संकुचित मानसिकता के भार से रामराज्य का सपना आँखो से ओझल होता जा रहा है। राजधर्म की जगह अब वोट की राजनीति चरम पर है।

शिव कुमार लोहिया

MARWARI SAMMELAN FOUNDATION

(A Trust of All India Marwari Federation)

उच्च शिक्षा कोष

समाज के बच्चों को शिक्षित कर परिवार को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में पहल

विगत ८ वर्षों में देश के विभिन्न भागों के सैंकड़ों छात्र-छात्राओं को करीब दो करोड़ रुपयों का दिया जा चुका है अनुदान

वित्तीय वर्ष (२०१८-१९) में ५२ लाख रुपयों से अधिक का आवंटन

"Education is a fundamental human right and essential for excercise of all other human rights."

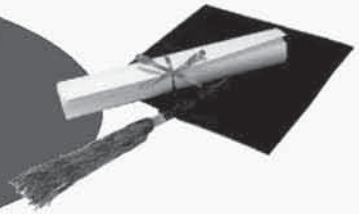

उदारहृदय समाजबंधुओं का मिल रहा है तहेदिल से साथ

आप भी बढ़ाएँ सहयोग का हाथ समाज के सर्वांगीण विकास में बनें भागीदार !

छात्र/छात्राएँ नि:शुल्क छात्रवृत्ति के लिये सम्पर्क करें

इंजीनियरिंग, टेक्निकल, चिकित्सा, मैनेजमेंट आदि क्षेत्रों में स्नातकोत्तर/उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति हेतु समाज के मेधावी एवं जरूरतमंद छात्र-छात्राओं से आवेदन आमंत्रित हैं।

पात्रता : (क) १७ और २५ वर्षों के बीच के उम्र के मेधावी छात्र-छात्राएँ जिनका शैक्षिक परीक्षाओं में प्रदर्शन उत्कृष्ट रहा हो और जिन्हें केवल अपनी योग्यता के बल पर किसी मान्यताप्राप्त शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल रहा हो।

(ख) जिन आवेदकों के माता-पिता की वार्षिक आय तीन लाख रुपयों से कम होगी, उन्हें प्राथमिकता दी जाएगी।

प्रक्रिया : (क) पूर्व शैक्षिक प्रमाणपत्रों, प्रवेश के प्रमाण, माता-पिता के आय प्रमाणपत्र एवं पासपोर्ट साइज चित्रों के साथ, मारवाड़ी सम्मेलन की किसी शाखा/सम्बद्ध संस्था से अनुमोदित आवेदन प्रस्तुत करने हैं।

(ख) एक छात्र-छात्रा को वर्ष में अधिकतम दो लाख रुपयों की राशि अनुदानस्वरूप दी जा सकती है।

(ग) प्रतिवर्ष कुछ छात्रवृत्तियाँ छात्राओं के लिए सुरक्षित हैं।

आवेदन करें : *चेयरमैन, उच्च शिक्षा उपसमिति, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन*

४बी, डकबैक हाउस, ४१, शेक्सपियर सरणी, कोलकाता-१७, फोन : (०३३) ४००४४०८९, ईमेल : aimf1935@gmail.com

अध्यक्षीय

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ!

– सन्तोष सराफ

अक्टूबर मास में हम दीपावली पर्व का उत्सव पालन करेंगे। दीपावली पाँच दिनो का महापर्व है। धनतेरस, नरकचतुर्दशी, अमावस्या, गोवर्धन पूजा, अन्नकूट एवं भैयादूज को मिलाकर पूरे देश में किसी न किसी रूप में इस त्यौहार को मनाया जाता है। सदियों से इसका पालन हो रहा है। मुगलशासनकाल में भी सभी धर्मों के लोग इन्हें मनाते थे। इस अवसर पर आकर्षक सजावट हुआ करती थी, जो अभी तक चली आ रही है।

दीपावली एक धार्मिक त्यौहार ही नहीं बल्कि सांस्कृतिक एवं सामाजिक त्यौहार भी हैं। एक कथा के अनुसार रामचन्द्रजी रावण का वध करके, १४ वर्षों के वनवास की मियाद पूरी होने पर जिस दिन अयोध्या वापिस लौटे, उस दिन शहर के प्रत्येक घर को दीपक के प्रकाश से आलोकित किया गया। दीपक का प्रकाश हमारे हर्षोल्लास का द्योतक है। अंधकार पर प्रकाश के विजय का द्योतक है। साथ ही, कहीं न कहीं यह आत्म-प्रकाश का प्रतिनिधित्व करता है। इसी दिन सागर-मंथन के दौरान माँ लक्ष्मी का प्रादुर्भाव हुआ था। १३ वर्ष का अज्ञातवास पूर्ण कर इसी दिन पांडव अपने राज्य लौटे थे। इसी दिन भगवान विष्णु ने राजा बलि को पाताल लोक का स्वामी बनाया था एवं इन्द्र ने स्वयं को सुरक्षित महसूस करते हुए दीप जलाये थे। सम्राट विक्रमादित्य का राज्याभिषेक दीपावली के दिन ही हुआ था। ईसापूर्व चौथी शताब्दी में रचित कौटिल्य अर्थशास्त्र के अनुसार कार्तिक अमावस्या के अवसर पर मंदिरों और घाटों पर बड़े पैमाने पर दीप जलाये जाते थे। ५०० ईसा पूर्व भी मोहनजोदाड़ो सभ्यता से प्राप्त अवशेषों में मिट्टी की एक मूर्ति के अनुसार उस समय भी दीपावली मनाई जाती थी।

दीपावली के बाह्यस्वरूप के साथ इस त्यौहार का एक आंतरिक संदेश भी है, जो कि हमें नई उर्जा एवं नया उत्साह प्रदान करता हैं।

दीपावली पर्व में निहित संदेश सम्पूर्ण मानव-मात्र के लिए विशेष स्थान रखता है। वह संदेश है अज्ञान पर ज्ञान, बुराई पर अच्छाई, असत्य पर सत्य, अंधकार पर प्रकाश, वैमनस्य पर सौहार्द के विजय का। बाह्य एवं आंतरिक विशेषता के फलस्वरूप भारत के अलावा विश्व के अनेक भागों में दीपावली श्रद्धा एवं उत्साह के साथ मनाई जाती है। दीपावली हमें अपनी बुराइयों से निजात पाने का अवसर देती है। समाज की कुरीतियाँ भी बुराइयों में शामिल है। एक-दूसरे के प्रति वैमनस्य, मद्यपान, दिखावा, आडम्बर, अन्याय आदि दुर्गुणों से समाज को बचाने के लिए सभी समाजबंधुओं को आगे आना होता है। आज यह देखा जाता है कि इस विषय में प्रायः अधिकांश लोग उदासीन रहते हैं। देखते-समझते हुए भी चुप रहते हैं। इस उदासीनता एवं शिथिलता से स्वयं को उपर उठाना होगा। तभी सच्चे अर्थ में दिवाली का संदेश हम आत्मसात कर सकेंगे।

व्यापारी वर्ग दिपावली के अवसर पर लक्ष्मी पूजन एवं नए विक्रम संवत पर खातापूजन भी करते हैं। अपने गिले-शिकवे मिटाकर हम नई शुरूआत करते हैं। अपने मन के संकुचन को दूर करके जीवन को सकारात्मकता से भरते हैं। जो व्यक्ति नकारात्मकता से ग्रसित होते हैं, दीपावली उनके लिए फीकी होती है। बदलते परिवेश में दिवाली के साथ जुड़े आतिशबाजी के रिवाज में बदलाव की आवश्यकता है। देश के सभी बड़े शहरों में प्रदूषण का स्तर खतरनाक से भी उपर रहता है। सभी हालातों में आतिशबाजी के धुएँ से प्रदूषण की मात्रा अत्यधिक हो जाती है। पर्यावरण को बचाकर रखने के लिए प्रत्येक नागरिक को सजग रहना चाहिए, क्योंकि अंत में इस कारण साधारण नागरिक को ही खामियाजा भोगना पड़ता है। दिल्ली जैसे शहरों में तो नागरिकों को श्वास लेने में भी कठिनाई हो जाती है। समय की माँग है कि हम सब अधिक से अधिक मात्रा में अपना सहयोग करें।

दीपावली के अवसर पर सभी देशवासियों को सम्मेलन एवं मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। सभी के जीवन में सुख, समृद्धि, सम्पदा, मधुरता एवं शांति का विस्तार हो, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ...

जय समाज, जय राष्ट्र!

Comprehensive and Exclusive

Business Economics

... Truly reflecting global aspirations!

Subscribe

100% Bargain

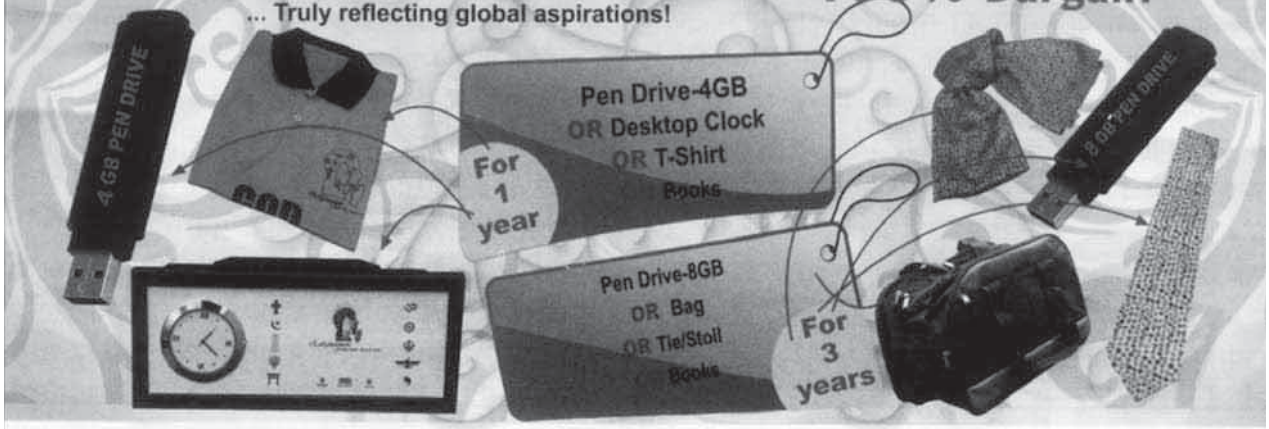

Subscribe Business Economics :

Subscribers may send choice of books valued equal to subscription

Tick	Term	No. of Issues	Price you pay	Gift Value	Saving	US $	UK £	Gift Option
☐	3 Years	72	1440/-	1440/-	1440/-	216	144	☐8GB Pen Drive OR ☐ Bag OR ☐ Tie/Stoll OR ☐ Books
☐	1 Year	24	480/-	480/-	480/-	72	48	☐ 4GB Pen Drive OR ☐ Desktop Clock OR ☐ T-Shirt OR ☐ Books
☐	1 Year	24 + Anniversary Issue (Worth ₹ 150)	240/-	150/-	390/-	-	-	☐ Exclusively for Students/Institutions
☐	1 Year	24 + Anniversary Issue (Worth ₹ 150)	240/-	150/-	390/-	-	-	☐ EXCLUSIVELY FOR SENIOR CITIZENS

For 1 year Book of choice upto ₹ 480 | **For 3 years Books of choice upto ₹ 1440**

Business Economics — Subscription Form

Name : Mr./Ms. _____

Address : _____

_____ City/District : _____

State : _____ Country : _____ Pin Code : ☐☐☐☐☐☐

E-mail : _____ Mobile : _____ Landline : _____ (STD CODE)

REMITTANCE DETAILS :

Enclosed Cheque / DD No. _____ dated: _____ for Rs. _____ drawn on: _____

In favour of **CONTEMPORARY NEWS PRIVATE LIMITED**

Signature: _____ date: _____

Mail this subscription form along with your Cheque / DD to : Pramod Kr. Singh, General Manager, **Business Economics**, 3, Middle Road, Hastings, Kolkata - 700 022, India
Ph : 033 - 2223 0335/0368, Mobile : 93395 19642, E-mail : subscriptions@businesseconomics.in

For Subscription enquiries contact : Kolkata : Shaonli Majumder : 033 2223-0368 • **Mumbai :** Rajendra Singh : 90290 84951
New Delhi : Lala P. Yadav : 98102 10095 • **Kohima :** Povotso Lohe : 94360 05889

Lucky DRAW

QUARTERLY LUCKY DRAW FOR THE SUBSCRIBERS :
1st Prize : INR 2000/- ● 2nd Prize : INR 1000/- ● 3rd Prize : INR 500/-

Diva®
from LA OPALA®

CLASSIQUE COLLECTION | IVORY collection | QUADRA COLLECTION | SOVRANA COLLECTION | COSMO collection

Registered Office
Chitrakoot, 10th Floor, 230 A, A J C Bose Road, Kolkata-700020
Ph: 76040 88814/15/16/17 | Email: info@laopala.in | www.laopala.in

With Best compliments From

Anzen Exports
&
Shubham Pharmachem Pvt. Ltd.

DEALER IMPORTER EXPORTER INDENTING AGENT FOR ALL KINDS OF ACTIVE PHARMACEUTICAL INGREDIENTS, PHYTOCHEMICALS, HERBAL EXTRACTS & ESSENTIAL OILS

KOLKATA

Anzen Exports

Regd. Office : 55/3D, Ballygunge Circular Road
Ground Floor, Kolkata-700 019, India

Admn. & Corres. Office :
157, Sarat Bose Road, 2nd Floor
Kolkata-700 026, India
20C, Hazra Road, 1st Floor, Kolkata-700 026, India
Tel : 91-33-2454 9650/51, 91-33-2454 8159
E-mail: info@anzen.co.in Web: www.anzen.co.in

MUMBAI

Shubham Pharmachem Pvt. Ltd.

205-206, Laxmi Plaza, Laxmi Industrial Estate
New Link Road, Andheri (W)
Mumbai - 400 053, India
P : +91 (22) 2635 4800 / 2635 4900
F: +91 (22) 6692 3929 / 2631 8808
Email: shubham@shubham.co.in

पश्चिम बंग सम्मेलन का संगठन-विस्तार : नौ नयी शाखाओं की स्थापना

अपनी भाषा और संस्कृति को रखें अक्षुण्ण : सीताराम शर्मा
संगठन का कोई विकल्प नहीं : नंदकिशोर अग्रवाल

"पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा पिछले कुछ समय से अत्यंत सक्रियता के साथ संगठन-विस्तार हेतु सघन अभियान चलाया जा रहा है और इसके सकारात्मक परिणाम प्राप्त हो रहे हैं। वर्तमान सत्र में पश्चिम बंग सम्मेलन की शाखाओं की संख्या ३ से १९ हो गई है और लगभग डेढ़ हजार नये सदस्य बने हैं। समाज के सभी तबकों को साथ लेकर समाजहित में अनवरत प्रयत्नशील रहने की हमारी कार्यशैली है और इससे लोग लगातार सम्मेलन से जुड़ रहे हैं जो हमारे लिए अत्यंत उत्साहवर्धक है।" ये विचार पश्चिम बंग सम्मेलन के अध्यक्ष **श्री नंदकिशोर अग्रवाल** ने व्यक्त किए।

गत ०८ से १२ सितम्बर २०१९ तक एक पाँच-दिवसीय अभियान चलाकर राज्य के विभिन्न भागों, मुख्यतः उत्तरी बंगाल क्षेत्र में, कुल नौ नयी शाखाओं की स्थापना की गई। श्री अग्रवाल ने बताया कि इसके लिए कई महीने पूर्व से ही आवश्यक कदम उठाये गये, प्रादेशिक सम्मेलन द्वारा विभिन्न स्थानों के समाजबंधुओं से समन्वय किया गया। उन्होंने बताया कि इसमें सम्मेलन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति के सदस्य एवं प्रादेशिक सम्मेलन द्वारा उत्तर बंगाल के संयोजक के रूप में मनोनीत **श्री पवन जालान** की अत्यंत महत्वपूर्ण एवं अग्रणी भूमिका रही।

०८ सितम्बर २०१९ को एस.एफ. रोड, सिलीगुड़ी स्थित सिद्धिविनायक बैंक्वेट हॉल में एक सभा आयोजित कर पश्चिम बंग सम्मेलन की **सिलीगुड़ी शाखा की स्थापना की गई**। बैठक को सम्बोधित करते हुए **सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं समाजचिंतक श्री सीताराम शर्मा ने सम्मेलन के इतिहास एवं पृष्ठभूमि के विषय में बताया। उन्होंने सामाजिक संगठन को आवश्यक बताते हुए अपनी भाषा एवं संस्कृति के विषय पर युवक-युवतियों एवं किशोर-किशोरियों को शिक्षित-सजग रखने को अनिवार्य बताया। संगठन-विस्तार में सक्रियता हेतु उन्होंने पश्चिम बंग सम्मेलन के अध्यक्ष श्री नंदकिशोर अग्रवाल एवं उनकी टीम की सराहना की।** बैठक में सर्वसम्मति से **श्री विष्णु केडिया** को सिलीगुड़ी शाखा का संस्थापक अध्यक्ष मनोनीत किया गया। **श्री रामावतार बरेलिया को संयोजक, श्री अरुण कन्दोई को सचिव, श्री बिजय अग्रवाल को सह-सचिव एवं श्री रमेश अग्रवाल को कोषाध्यक्ष मनोनीत किया गया।**

०८ सितम्बर २०१९ को ही जलपाईगुड़ी स्थित अग्रसेन भवन में एक सभा आयोजित कर पश्चिम बंग सम्मेलन की **जलपाईगुड़ी शाखा की स्थापना की गई। श्री कृष्ण कुमार कल्याणी संस्थापक अध्यक्ष एवं श्री प्रदीप सितानी सचिव मनोनीत हुए।**

सिलिगुड़ी शाखा के संस्थापक अध्यक्ष श्री विष्णु केडिया को पगड़ी पहनाते श्री सीताराम शर्मा एवं श्री नंद किशोर अग्रवाल (सबसे दाहिने)।

जलपाईगुड़ी शाखा के संस्थापक अध्यक्ष श्री कृष्ण कुमार कल्याणी (पगड़ी में); साथ में श्री नंदकिशोर अग्रवाल, श्री पवन जालान एवं अन्य।

०८ सितम्बर २०१९ को ही माल बाजार रोड, मैनागुड़ी स्थित मारवाड़ी जनकल्याण समिति भवन में एक सभा आयोजित कर पश्चिम बंग सम्मेलन की **मैनागुड़ी शाखा की स्थापना की गई। श्री हनुमान प्रसाद कल्याणी संस्थापक अध्यक्ष एवं श्री सुनील खोरिया सचिव मनोनीत हुए।**

मैनागुड़ी शाखा के संस्थापक अध्यक्ष श्री हनुमान प्रसाद कल्याणी (पगड़ी में); साथ में परिलक्षित हैं श्री नंदकिशोर अग्रवाल एवं श्री पवन जालान (सबसे दाहिने)।

०९ सितम्बर २०१९ को मॉल रोड, दार्जिलिंग स्थित पाइनट्री होटल में एक सभा आयोजित कर पश्चिम बंग सम्मेलन की **दार्जिलिंग शाखा की स्थापना की गई। श्री बृजमोहन गर्ग संस्थापक अध्यक्ष एवं श्री हिमांशु गर्ग सचिव मनोनीत हुए।**

दार्जिलिंग शाखा के संस्थापक अध्यक्ष श्री बृजमोहन गर्ग (पगड़ी में) के साथ श्री नंदकिशोर अग्रवाल एवं श्री पवन जालान।

०९ सितम्बर २०१९ को ही बर्दवान रोड, कर्सियांग स्थित मोहोपाल रेसिडेन्सी में एक सभा आयोजित कर पश्चिम बंग सम्मेलन की **कर्सियांग शाखा की स्थापना की गई। श्री राजेन्द्र प्रसाद अग्रवाल संस्थापक अध्यक्ष एवं श्री रमेश मित्तल (अग्रवाल) सचिव मनोनीत हुए।**

कार्सियांग शाखा के संस्थापक अध्यक्ष श्री राजेन्द्र प्रसाद अग्रवाल (पगड़ी में) के साथ श्री नंदकिशोर अग्रवाल एवं श्री पवन जालान।

१० सितम्बर २०१९ को अलिपुरद्वार के मारवाड़ी यूथ सेवा सदन में एक सभा आयोजित कर पश्चिम बंग सम्मेलन की **अलिपुरद्वार शाखा की स्थापना की गई। श्री मुरारीलाल अग्रवाल संस्थापक अध्यक्ष एवं श्री मानिक लाल बोथरा सचिव मनोनीत हुए।**

११ सितम्बर २०१९ को रायगंज के मारवाड़ी भवन में एक सभा आयोजित कर पश्चिम बंग सम्मेलन की **रायगंज शाखा की स्थापना की गई। श्री शुभकरन सैंड संस्थापक अध्यक्ष एवं श्री जय प्रकाश अग्रवाल सचिव मनोनीत हुए।**

अलिपुरद्वार शाखा के संस्थापक अध्यक्ष श्री मुरारीलाल अग्रवाल (पगड़ी में) के साथ श्री नंदकिशोर अग्रवाल एवं श्री पवन जालान।

रायगंज शाखा के संस्थापक अध्यक्ष श्री शुभकरण सैंड (पगड़ी में, दाहिने) के साथ श्री नंदकिशोर अग्रवाल एवं श्री पवन जालान।

११ सितम्बर २०१९ को ही मालदह के गांधी हिन्दू धर्मशाला में एक सभा आयोजित कर पश्चिम बंग सम्मेलन की **मालदह शाखा की स्थापना की गई। श्री प्रवीण कुमार बाँठिया संस्थापक अध्यक्ष एवं श्री चन्द्र कुमार बिहानी सचिव मनोनीत हुए।**

मालदह शाखा के संस्थापक अध्यक्ष श्री प्रवीण कुमार बाँठिया को पगड़ी पहनाते श्री नंदकिशोर अग्रवाल।

१२ सितम्बर २०१९ को बर्दवान के सिटी टावर में एक सभा आयोजित कर पश्चिम बंग सम्मेलन की **बर्दवान शाखा की स्थापना की गई। श्री घनश्याम अग्रवाल संस्थापक अध्यक्ष एवं श्री संदीप भीमराजका सचिव मनोनीत हुए।**

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री नंद किशोर अग्रवाल ने बताया कि इन सभी सभाओं में समाज के पुरुष-महिलाओं ने भारी संख्या में अपनी उपस्थिति दर्ज करायी और सम्मेलन के विषय में जानने और जुड़ने को उत्सुक दिखे। उन्होंने कहा कि समाजबंधुओं का यह उत्साह हमारे लिए प्रेरणास्रोत है। **श्री अग्रवाल ने संगठन-विस्तार के इस अभियान की प्रारम्भिक सभा में उपस्थित होकर मार्गदर्शन करने हेतु सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा एवं सक्रिय भूमिका हेतु संयोजक श्री पवन जालान, प्रादेशिक महामंत्री श्री शिव कुमार अग्रवाल, श्री प्रेमचंद सुरेलिया आदि का आभार ज्ञापित किया।**

बर्दवान शाखा के संस्थापक अध्यक्ष श्री घनश्याम अग्रवाल (पगड़ी में) के साथ श्री नंदकिशोर अग्रवाल, श्री शिव कुमार अग्रवाल एवं स्थानीय समाजबंधु।

प्रांतीय समाचार : पूर्वोत्तर

असम में राष्ट्रीय नागरिक पंजी प्रकरण

मारवाड़ी समाज ने भी उच्च स्तरीय समिति के सम्मुख रखा अपना पक्ष

असम समझौते की धारा ६ के विषय पर केंद्र सरकार द्वारा गठित उच्च स्तरीय समिति के आह्वान पर विभिन्न दल-संगठनों ने समिति के सम्मुख अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए। इसी कड़ी में मारवाड़ी समाज का पक्ष रखने के लिए उक्त समिति ने पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन एवं पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी युवा मंच के संयुक्त प्रतिनिधिमंडल को आमंत्रित किया, प्रतिक्रियास्वरूप गत ४ अक्टूबर २०१९ को एक प्रतिनिधिमंडल समिति से जाकर जिला, ज्ञापन सौंपा और खुलकर अपनी बातें समिति के सम्मुख प्रस्तुत की।

उक्त प्रतिनिधिमंडल में सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष मधुसूदन सीकरिया, पूर्व प्रांतीय अध्यक्ष डॉ. श्यामसुंदर हरलालका, प्रांतीय महामंत्री राजकुमार तिवाड़ी, पूर्व प्रांतीय महामंत्री प्रमोद तिवाड़ी, युवा मंच के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल जैना, प्रांतीय महामंत्री राहुल अग्रवाल एवं सामाजिक चिंतक विनोद रिंगानिया सम्मिलित थे। डॉ. हरलालका एवं श्री जैना ने अपने संबोधन में विस्तारपूर्वक समाज का पक्ष रखते हुए विगत तीन शताब्दी से भी अधिक समय से मारवाड़ी समाज द्वारा असम के सर्वांगीण विकास में किए गए अवदानों का जिक्र किया तथा मारवाड़ी समाज को बृहत्तर असमिया समाज का अभिन्न अंग बताया।

दल के सदस्यों का कहना था कि मारवाड़ी समाज कभी भी असम के विकास में बाधक नहीं रहा। असम की आर्थिक उन्नति एवं स्थानीय लोगों को रोजगार मुहैया कराने में मारवाड़ी समाज का योगदान सर्वोपरि रहा है। न ही इतिहास में कभी किसी कार्य में मारवाड़ी समाज बाधक बना है। समाज के लोगों ने अपनी मेहनत से यहाँ जो सृजन किया है, उसका व्यय भी असम के विकास में वहीं किया है।

इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए मारवाड़ी समाज को वर्तमान में प्राप्त उसके किसी भी अधिकार से वंचित नहीं किया जाना चाहिए। यह जानकारी सम्मेलन के प्रांतीय जनसंपर्क अधिकारी विवेक सांगानेरिया ने दी है।

जब मारवाड़ी युवकों ने क्रांतिकारियों का साथ दिया

रोडा एंड कम्पनी, बर्मिंघम, ब्रिटेन में बंदूक, पिस्तौल एवं उनकी गोलियाँ बनाती थी। उस कम्पनी की बर्मिंघम, लंदन एवं कलकत्ता में दुकानें थी। जून १९१४ में ब्रिटिश सरकार ने रोडा एंड कम्पनी को ५० मौजर पिस्तौल, अर्द्ध स्वचालित पिस्तौल, ४६०००, ७.६३x२५ मिलीमिटर साइज के गोलियों का आर्डर दिया था। सी९६ एक बहुत ही चर्चित एवं लोकप्रिय पिस्तौल था, जिसका विश्व के अनेक क्षेत्रों में उपयोग होता था। रोडा एंड कम्पनी के एक कर्मचारी श्री सिरिश मित्रा प्रख्यात क्रांतिकारी विपिन बिहारी गांगुली एवं उनके साथियों के सम्पर्क में था। लंदन से पूरा माल आ चुका था एवं २६ अगस्त १९१४ को कस्टम हाउस से यह माल छुड़वाने के लिये सिरिश मित्रा की बात थी। उसने विप्लवियों को इसकी सूचना दे दी। पूरा माल छुड़वा लिया गया एवं व्यवस्था के मुताबिक पूरा जखीरा क्रांतिकारियों के हाथ आ गया। इस घटना से ब्रिटिश सरकार सकते में आ गई। इस पूरे घटना में क्रांतिकारियों की अभिनव सोच एवं मात्र एक बैलगाड़ी का प्रयोग हुआ था। ब्रिटिश सरकार ने इस घटना को बंगाल में क्रांतिकारियों के बढ़ते कारगुजारियों के पीछे सर्वोच्च महत्वपूर्ण घटना की संज्ञा दी थी। १९१९ में सर सिडनी रौखेर ने रोडा अस्त्र लूट पर अपने रिपोर्ट के पेज ५६ मे लिखा "इन अधिकारियों को यह विश्वस्त सूत्रों से खबर है कि लूटे गये पिस्तौल में से ४४ पिस्तौल ९ अलग-अलग क्रांतिकारी दलों में तुरंत बाँट दिया गया। इन शस्त्रों का ५४ घटनाओं में प्रयोग किया गया।" इनका प्रयोग बाघा जतीन, रास बिहारी बोस, भगत सिंह, चन्द्र शेखर आजाद के द्वारा होने के अतिरिक्त काकोरी डकैती कांड, चिटागोंग डकैती जैसे वारदातों में हुआ।

इस घटना की महत्ता जानने के लिए इसके पृष्ठभूमि को जानना आवश्यक है। सन् १९१४ में पहला विश्वयुद्ध आरम्भ हो चुका था। अंतर्राष्ट्रीय जगत का ध्यान उस पर केन्द्रित था। विभाजन के पश्चात् बंगाल में क्रांतिकारी लहर चल रही थी। देश में स्वतंत्रता-संग्राम जोर पकड़ रहा था। १९०८ से १९१२ के मध्य अनेक उच्च पदस्थ ब्रिटिश अधिकारियों की हत्या हो चुकी थी। १९११ में राजधानी कलकत्ता से दिल्ली ले जाने के बाद भी स्वाधीनता की लहर थमने का नाम नहीं ले रही थी। दिल्ली की सड़क पर दिसम्बर १९१८ में वायसराय लार्ड हार्डिंग की हत्या का असफल प्रयास किया गया, जिसमें वे गंभीर रूप से घायल हो गए। क्रांतिकारियों का सोचना था कि सर्वभारतीय विद्रोह के लिये उपयुक्त समय आ चुका था। उन्हें काफी मात्रा में अस्त्र-शस्त्र की कमी महसूस हो रही थी। रास विहारी बोस, बाघा जतीन ने अपनी जुगांतर पार्टी के मार्फत जर्मनी से अस्त्र-शस्त्र के जहाज मँगवाने की चेष्टा की पर सफल नहीं हो सके। एक अन्य क्रांतिकारी दल आत्मोन्नति समिति, जो विपिन विहारी गांगुली के तहत कार्य कर रही थी, ने ही रोडा कम्पनी से शस्त्रों का जखीरा चमत्कारिक ढंग से हथियाने में सफलता हासिल कर ली।

घनश्याम दास बिड़ला

हनुमान प्रसाद पोद्दार

प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका

गौरतलब यह है कि इस महत्वपूर्ण घटना में कलकत्ता के मारवाड़ी युवकों ने भी सक्रिय रूप से क्रांतिकारियों का साथ दिया। इन मारवाड़ी युवकों में **घनश्याम दास बिड़ला, प्रभु दयाल हिम्मतसिंहका, कन्हैया लाल चितलांगिया, ओंकारमल सराफ, ज्वाला प्रसाद कानोड़िया, हनुमान प्रसाद पोद्दार एवं फूलचंद चौधरी शामिल थे।** कारतूस की पेटियों को छिपाने में इनका महत्वपूर्ण योगदान था। ९ जुलाई १९१६ को उनकी गिरफ्तारी हुई। सबको जेल की अलग-अलग कोठरियों में रखा गया। प्रभुदयाल हिम्मसिंहका के यहाँ तलाशी में क्रांतिकारी अंकुल चन्द्र की चिट्ठी मिली थी। उन्हें दुमका में नजरबंद किया गया। कन्हैया लाल चितलांगिया को गंगासागर के पास काकद्वीप में रखकर घोर यंत्रणायें दी गई। ओंकारमल सराफ का क्रांतिकारी आशुतोष लाहिरी से अंतरंग संबंध था। घनश्याम दास बिड़ला और ज्वाला प्रसाद कानोड़िया पर निकला हुआ वारंट, इनके भूमिगत हो जाने के कारण तामील नहीं हो सका। हनुमान प्रसाद पोद्दार को सिमलीपाल, बांकुड़ा में नजरबंद रखा गया। जनवरी १९२० में कैदियों के क्षमादान की घोषणा के बाद उनकी रिहाई हुई। प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका ने तो इस घटना में सक्रिय भाग लिया था।

Krishi Rasayan Group

29, Lala Lajpat Rai Sarani (Elgin Road),
Kolkata - 700020, West-Bengal, India
www.krishirasayan.com
E-mail: atul@krishirasayan.com
Telephone: +91-33-71081010/11

With more than 50 years of experience in the agro-chemical business and being one of the oldest and leading agrochemical companies of India, **Krishi Rasayan** is touching new heights with each passing day.

The continuous process of upgradation, development and inherent changes according to the market requirements have helped **Krishi Rasayan** become a leader in the domestic circuit. **Krishi Rasayan** is expanding word-wide with exports and overseas registrations focusing on South-East Asia, Africa, Middle-East, CIS and Latin America.

Krishi Rasayan has 8 multi-location manufacturing plants in different parts of India and has 5 overseas subsidiaries.

It also boasts of having contract technical manufacturing units in India manufacturing Pretilachlor, Ethephon, Cypermethrin, Profenofos, Imidacloprid, Thiamethoxam, Metalaxyl, Metribuzin, Acetamiprid, Glyphosate, Tricyclazole, Butachlor, Emamectin benzoate, Difenconazole and Chlorpyriphos.

Additional technical products to be added are under process. The company has technical tie-ups and contract manufacturing with various companies in China and also has an office in Shanghai, China.

The company has many products including formulations such as EC, SC, WDG, SP, GR, EW and CS

Krishi Rasayan specializes in many combination products & bio-products. GLP data are available for most of the products; both 5-batch and 6-pack study.

Insecticides:
Deltamethrin 1% + Triazofos 35% EC, Profenofos 40% + Cypermethrin 4% EC, Ethion 40% + Cypermethrin 4% EC, Chlorpyriphos 50% + Cypermethrin 5% EC, Acephate 25% + Fenvalerate 3% EC, Buprofezin 15% + Acephate 35% WP, Profenofos 20% + Cypermethrin 2% EC, Deltamethrin 2.5% + Permethrin 2.5% EC, and many other forumlations available.

Fungicides:
Metalaxyl 8% + Mancozeb 64% WP, Carboxin 37.5% + Thiram 37.5% DS, Carbendazim 12% + Mancozeb 63% WP, Streptomycin sulphate + Tetracycline hydrochloride (90:10), Iprodione 25% + Carbendazim 25% WP, Cymoxanil 8% + Mancozeb 64% WP, etc

Weedicides:
Metsulfuron methyl 10% + Chlorimuron ethyl 10% WP & other formulations available.

PGR's:
6BA, Amino Acids, Ethephon, Gibberallic Acid, Hydrogen Cynamide, Tricontanol

Bio-Products:
Bacillus thuringiensis var kurstaki 7.5% WP, Trichoderma harzianum 2% WP, Trichoderma viride 1% WP, Pseudomonas fluorescens 0.5% WP, Neem Oil, Azadirachtin, Beauveria bassiana 1.15% WP, Verticillium lecani 1.15% WP and other formulations available.

To your taste buds, with love...

Refreshingly, yours.

Indulgently, yours.

Addictively, yours.

Spicily, yours.

Healthily, yours.

Nourishingly, yours.

Delightfully, yours.

Obsessively, yours.

Temptingly, yours.

Passionately, yours.

Snackingly, yours.

Yours Tastefully Anmol™

celebrating 25 years

BISCUITS

www.anmolindustries.com | Follow us on:

दिवाली में प्रज्वलित करें ज्ञान और प्रेम का दीपक – श्री श्री रविशंकर

एक दीपक की बाती को जलने के लिए उसे तेल में डूबे होना चाहिए, और साथ ही तेल के बाहर भी रहना चाहिए। यदि बाती तेल में पूरी डूब जाए, तो वह प्रकाश नहीं दे सकती। जीवन भी दीपक की बाती के समान है, तुम्हें संसार में रहते हुए भी उससे निष्प्रभावित रहना होता है। अगर तुम पदार्थ जगत में डूबे हुए हो, तो जीवन में आनंद और ज्ञान नहीं ला पाओगे। संसार में रहते हुए भी, सांसारिक माया के ऊपर उठकर हम आनंद और ज्ञान के ज्योति-प्रकाश बन सकते हैं। इस प्रकार से ज्ञान के प्रकाश के प्रकट होने का उत्सव ही दिवाली है। दीपावली बुराई पर अच्छाई का, अंधकार पर प्रकाश का और अज्ञान पर ज्ञान के विजय का त्योहार है।

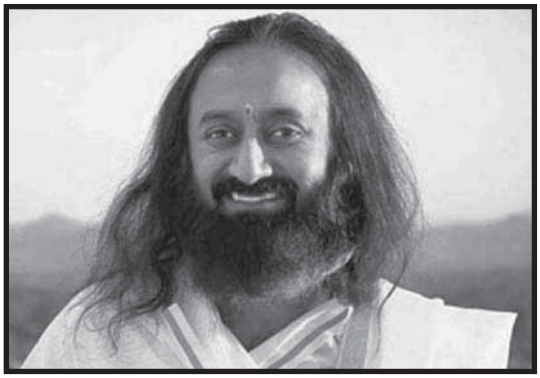

हरेक दिल में प्रेम और ज्ञान की लौ को प्रज्ज्वलित करें और सभी के चेहरों पर सच्ची मुस्कान लाएँ। प्रत्येक मनुष्य में कुछ सद्‌गुण होते हैं। आपके द्वारा प्रज्ज्वलित प्रत्येक दीपक इसी का प्रतीक है। कुछ में धैर्य होता है, कुछ में प्रेम, शक्ति, उदारता, अन्य में लोगों को साथ मिलाकर चलने की क्षमता होती है। आप में स्थित अव्यक्त सद्‌गुण दीपक के समान हैं। केवल एक ही दीप जलाकर संतुष्ट न हों; हजारों दीप प्रज्ज्वलित करें क्योंकि अज्ञान के अंधकार को दूर करने के लिए अनेक जोत जलाने होंगे। ज्ञान की ज्योति प्रज्ज्वलित होने से आत्मस्वरूप के सभी पहलू जाग्रत हो जाते हैं और उनका जाग्रत और प्रकाशित हो जाना ही दीपावली है।

जीवन का एक और गूढ़ रहस्य दिवाली के पटाखों के फूटने में है। जीवन में कई बार आप पटाखों के समान अपनी दबी हुई भावनाओं, कुंठाओं और क्रोध के कारण अति ज्वलनशील रहते हैं। बस फूटने के लिए तैयार, अपने राग-द्वेष, घृणा आदि को दबाकर हम फटने की उस स्थिति तक पहुँच जाते हैं कि अब फूटे कि तब। विस्फोट के साथ प्रकाशपुंज भी होता है और आप अपनी दबी हुई भावनाओं से मुक्त होते हैं फिर अंदर में शांति का उदय होता है।

अपने नित नूतन और चिर पुरातन स्वभाव का अनुभव करने के लिए दबी हुई भावनाओं से मुक्त होना अति आवश्यक है। दीपावली का अर्थ है, वर्तमान क्षण में जीना, अतः अतीत का पछतावा और भविष्य की चिंता छोड़कर वर्तमान क्षण में जीएँ। दीपावली की मिठाइयों और उपहारों के आदान-प्रदान के पीछे भी एक मनोवैज्ञानिक पहलू है। पुरानी गलतफहमी की कड़वाहट को छोड़कर संबंधों को मधुर बनाते चलो। सेवा भाव के बिना हर उत्सव अधूरा है। परमात्मा ने जो कुछ भी हमें दिया है उस प्रसाद को हमें सबके साथ बाँटना है क्योंकि जितना बाँटेंगे उतनी ही उसकी कृपा और बरसती है।

उत्सव का और एक अर्थ है – अपने मतभेदों को मिटाकर अद्वैत आत्मा की ज्योति से अपने सच्चिदानन्द स्वरूप में विश्राम करना। दिव्य समाज की स्थापना के लिए हर दिल में ज्ञान व आनंद की ज्योति जलानी होगी। और वह तभी संभव है यदि सब एक साथ मिलकर ज्ञान का उत्सव मनाएँ। बीते हुए वर्ष के झगड़े-फसाद और नकारात्मकताओं को छोड़कर अपने भीतर उदित हुए ज्ञान पर प्रकाश डालकर एक नई शुरूआत करना ही दीपावली का उत्सव है। जब सच्चा ज्ञान उदित होता है, तब उत्सव होता है।

अधिकतर उत्सवों में हम अपनी सजगता या एकाग्रता खोने लगते हैं। उत्सव में सजगता बनाए रखने के लिए, हमारे ऋषियों नें प्रत्येक उत्सव को पावन बनाकर पूजा-विधियों के साथ जोड़ दिया इसलिए दिवाली भी पूजा का समय है। दिवाली का आध्यात्मिक पहलू उत्सव में गहराई लाता है। प्रत्येक उत्सव में आध्यात्म होना चाहिए क्योंकि आध्यात्म के बिना उत्सव छिछला होता है। जो ज्ञान में नहीं हैं, उनके लिए वर्ष में एक बार ही दिवाली आती है, किंतु जो ज्ञानी हैं उनके लिए प्रत्येक दिन, प्रतिक्षण दिवाली है। इस दिवाली को ज्ञान के साथ मनाएँ और मानवता की सेवा करने का संकल्प लें। अपने दिल में प्रेम का दीपक जलाओ।

अतीत को जाने दो, भूल जाओ जीवन का उत्सव बुद्धिमता से मनाओ। बुद्धिमता के बिना वास्तव में उत्सव नहीं मनाया जा सकता। बुद्धिमता यह जान लेना है कि ईश्वर मेरे साथ है। आज के दिन हम सब के पास जो भी सम्पति है उसे देखो। याद रखो आप के पास बहुत सारी सम्पति है और पूर्णता महसूस करो। नहीं तो मन हमेशा कमी में ही रहेगा, "ओह यह नहीं है.... वो नहीं है, इसके लिए दुखी, उसके लिए दुखी।" कमी की ओर से प्रचुरता की ओर बढ़ो। प्राचीन पद्धति है कि अपने सामने सभी सोने-चाँदी के सिक्के रखे जाते हैं, आप अपनी सारी सम्पति सामने रखते हो और कहते हो, "देखो भगवान ने मुझे इतना सब दिया है। मैं बहुत आभारी हूँ।"

तब हम लक्ष्मी पूजा करते हैं। धन और ऐश्वर्य की देवी लक्ष्मी की पूजा की जाती है, और गणेश - चेतना का आवेग जो हमारे रास्ते के सारे विघ्न हर लेते है – यह जप आज के दिन किया जाता है।

दौलत हमारे भीतर है सोना-चाँदी केवल एक बाहिरी प्रतीक है। दौलत हमारे भीतर है। भीतर में बहुत सारा प्रेम, शांति और आनंद है। इससे ज़्यादा दौलत आपको और क्या चाहिए? बुद्धिमत्ता ही वास्तविक धन है। आपका चरित्र, आपकी शांति और आत्मविश्वास आपकी वास्तविक दौलत है। जब आप ईश्वर के साथ जुड़ कर आगे बढ़ते हो तो इससे बढ़कर कोई और दौलत नहीं है। जब लहर यह याद रखती है कि वह समुद्र के साथ जुड़ी हुई है और समुद्र का हिस्सा है तो विशाल शक्ति मिलती है।

महात्मा गांधी की १५०वीं जयन्ती पर विशेष

गांधीजी, बंगाल और मारवाड़ी समाज

– सीताराम शर्मा

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का बंगाल के साथ सदैव एक असहज रिश्ता रहा। यह एक अकाट्य सत्य है। नोबेल अर्थशास्त्री प्रो. अमर्त्य सेन ने इसे स्वीकार करते हुए लिखा है – "भद्र बंगाली समाज की गांधी से बराबर एक दूरी एवं असहमति की भावना रही।" यह सच है कि राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक दृष्टि से बंगाल देश के शेष प्रांतो से शिक्षा एवं सामाजिक मूल्यों में कहीं अधिक उन्नत था। गांधी एवं बंगाल के बीच विचारों एवं संबंधों में एक अनकहा लेकिन स्पष्ठ खिंचाव एवं तनाव था।

२७ वर्षीय गांधी की प्रथम बंगाल यात्रा

४ जुलाई १८९६ को दक्षिण अफ्रीका से वापस लौटते हुए मोहनदास करमचन्द गांधी पहली बार एक दिन की यात्रा पर कलकत्ता आये। बड़े उत्साह के साथ वे प्रायः पैदल ही स्वामी विवेकानन्द के दर्शन के लिये बेलूर मठ गये, लेकिन निराशा हाथ लगी, जब विदित हुआ कि बीमारी की वजह से वे अपने कलकत्ता निवास स्थान पर ही हैं। उसी शाम को ट्रेन से बम्बई रवाना हो गये।

तीन महीने बाद ३१ अक्तूबर को गांधी दुबारा कलकत्ता आये। अजनबी शहर, अजनबी लोग, किसी को नहीं जानते थे, ग्रेट इस्टर्न होटल में ठहरे। ड्रेस सर्कल की ४ रुपये की टिकट खरीद कर बीडन स्ट्रीट में एक ड्रामा देखने गये।

ग्रेट इस्टर्न होटल में उनका परिचय लन्दन के डेली टेलिग्राफ के रिपोर्टर से हुआ। वे गांधी को बंगाल क्लब ले गये लेकिन उस समय भारतीयों को क्लब के ड्राइंग रूम में जाने की इजाजत नहीं थी इसलिये रिपोर्टर गांधी को अपने कमरे में ले गये।

गांधी की यह कलकत्ता यात्रा बहुत ही निराशाजनक रही। वे अपनी आत्मकथा में लिखते हैं, मैं "आयडल आफ बंगाल" सुरेन्द्रनाथ बनर्जी से मिलना चाहता था। मैं दक्षिण अफ्रीका में ब्रिटिश भारतीय मूल के नागरिकों के विरुद्ध अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाना चाहता था अखबारों एवं जनसभाओं के माध्यम से। सुरेन्द्र नाथ बनर्जी से मेरी मुलाकात सफल नहीं रही, उन्होंने विषय में कोई रूचि नहीं दिखाई और मुझे राजा सर प्यारी मोहन मुखर्जी एवं महाराजा टैगोर से मिलने को कहा, दोनों ने बड़ा ठण्डा स्वागत किया और वापस सुरेन्द्र बनर्जी के पास जाने को ही कहा।"

गांधीजी का बंगाल के प्रमुख समाचार पत्रों के सम्पादकों से मिलने का प्रयास तो बहुत ही निराशाजनक रहा। अमृत बाजार पत्रिका के जिस वरिष्ठ पत्रकार से गांधीजी मिल पाये, उन्होंने गांधीजी को एक घुमक्कड़ यहूदी समझा और विदा कर दिया। उस समय के सबसे प्रमुख बंगाली अखबार "बंगवासी" के सम्पादक ने पहले तो उन्हें एक घण्टा बाहर बैठा दिया, आखिर जब मिले तो सम्पादक महोदय ने गांधी को झिड़कते हुए कहा "आप जैसे लोगो का यहाँ सुबह-शाम ताँता लगा रहता है, मेरे पास आपकी बात सुनने का समय नहीं हैं।" स्थानीय नेताओं एवं पत्रकारों से निराश गांधीजी को विदेशी अखबारों – "द स्टेट्समैन" एवं "द इंग्लिशमैन", ने बड़ा महत्व दिया। २७ वर्षीय युवा मोहनदास करमचन्द गांधी का बंगाल से यह पहला साक्षात्कार था, जो निश्चित रूप से सुखद नहीं था। वे कलकत्ता में एक आम सभा करना चाहते थे लेकिन तत्कालीन राजनैतिक-सामाजिक नेतृत्व ने उनके दक्षिण अफ्रीकी आंदोलन में कोई रुचि नहीं दिखायी।

गांधी के पास समय ही समय था इसलिये उन्होंने अपने इस प्रवास में कई फिल्म एवं थियेटर देखे लेकिन किसी भी राजनैतिक महत्व के व्यक्ति से नहीं मिल पाये।

कांग्रेस अधिवेशन में भाग लेने के लिये २४ दिसम्बर १९०१ में कलकत्ता आते हैं और ६ बैंकशाल स्ट्रीट स्थित इण्डिया क्लब में ठहरते हैं। अधिवेशन में दक्षिण अफ्रीका पर प्रस्ताव रखने में गोपाल कृष्ण गोखले मदद करते है और अधिवेशन के बाद गांधी को अपने ९१, अपर चितपुर रोड, घर पर लिवा आते हैं – और इसी के बाद गोखले गांधी के सबसे बड़े समर्थक के रूप में उभरते हैं।

१९०१ मे कांग्रेस अधिवेशन के बाद अगले वर्ष १९०२ जनवरी में कलकत्ता आते हैं और वायसराय लार्ड कर्जन से मिलने का प्रयास करते हैं लेकिन गांधी को मुलाकात का समय नहीं दिया जाता।

टैगोर एवं देशबन्धु के साथ मतभेद

१९०२ की यात्रा के उपरान्त गांधी १३ वर्षों के बाद १९१५ में शांतिनिकेतन (बंगाल) जाते हैं और १० मार्च १९१५ को पहली बार रवीन्द्रनाथ टैगोर से मिलते हैं। विश्वभारती में आज तक १० मार्च "गांधी पुण्य" के रूप में मनाया जाता है।

देशबन्धु चित्तरंजन दास एवं सुभाष चन्द्र बोस ने चौरी-चौरा घटना पर सत्याग्रह आन्दोलन वापस लेने की खुलकर आलोचना की। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने १९२९ में गांधी के खादी आन्दोलन की आलोचना की। दिसम्बर १९२२ के गया कांग्रेस अधिवेशन में मतभेद उमर कर सामने आये जब तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष देशबन्धु चितरंजन दास द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव ८९० के मुकाबले १७४८ वोटों से गांधी समर्थकों द्वारा पराजित कर दिया गया। चितरंजन दास ने कांग्रेस अध्यक्ष से इस्तीफा देकर मोतीलाल नेहरू के साथ मिलकर स्वराज्य पार्टी का गठन किया।

सुभाष-गांधी का टकराव

१९३६-३७ के आस-पास भारत के प्रायः सभी प्रान्तों में कांग्रेस की सरकार थी, सिवाय बंगाल के। १९३९ में सुभाष बोस के कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में पुनर्निर्वाचन का गांधीजी ने खुलकर

विरोध करते हुए डॉ. भोगराजू पट्टाभि सीतारमैया का समर्थन किया। सुभाष बड़े मतों से विजयी घोषित हुए – इसे गांधी की हार माना गया। गांधी ने इसे स्वीकार करते हुए कहा – "यह सीतारमैया से अधिक मेरी हार है"। गंभीर मतभेद एवं विरोध के बीच सुभाष ने २९ अप्रैल १९३९ को कांग्रेस अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दिया एवं ३ मई को फारवर्ड ब्लाक की स्थापना की घोषणा कर दी।

स्पष्टतः बंगाल और गांधी में मतभेद बार-बार उभर कर सामने आ रहे थे। गांधीजी के हस्तक्षेप की वजह से बंगाल से दो-दो निर्वाचित कांग्रेस अध्यक्षों – देशबंधु चित्तरंजन दास एवं सुभाष चन्द्र बोस, को त्यागपत्र देना पड़ा। मतभेदों के बावजूद गांधी एवं सुभाष में पत्राचार बराबर जारी रहा और एक-दूसरे के प्रति सम्मान में कोई कमी नहीं आई। इस बीच गांधी और टैगोर के व्यक्तिगत सम्पर्कों में सुभाष प्रकरण के बावजूद लगातार सुधार होता रहा। गांधीजी ने टैगोर को "गुरुदेव" एवं टैगोर ने गांधी जी को "महात्मा" कहकर एक-दूसरे के प्रति आदर व्यक्त किया। एक तरफ जहाँ बंगाल की आम जनता ने गांधीजी को हृदय से लगाया, वहीं बुद्धिजीवियों का एक तबका उनसे बराबर प्रश्न करता दिखता है।

गांधीजी एवं मारवाड़ी समाज

१३ मार्च १९१५ को कलकत्ता में मारवाड़ी समाज द्वारा गांधीजी के सम्मान में एक अभिनन्दन समारोह आयोजित किया जाता है, जिस विषय में विस्तृत जानकारी उपलब्ध नहीं है। उन्हीं दिनों, १२ मार्च को गुजराती मण्डल द्वारा सम्मान समारोह का भी समाचार है। उसी वर्ष २५ दिसम्बर को गांधी कलकत्ता में एक धर्मशाला में ठहरते हैं जिसकी व्यवस्था जमनालाल बजाज ने की थी।

३१ दिसम्बर १९२१ को श्वेताम्बर परिषद में जैन समाज की बैठक को सम्बोधन करते हैं जिसकी अध्यक्षता सेठ खेतसी खियासी ने की। २६ जनवरी १९२१ को बड़ाबाजार में व्यापारियों की बैठक को सम्बोधित करते हैं जहाँ इतनी भीड़ थी कि मंच पर पहुँचने में उन्हें एक घण्टा समय लगा। २७ जनवरी को तिलक नेशनल स्कूल का मछुआ बाजार में उद्घाटन किया और ३ फरवरी को गुजराती समाज द्वारा मनमोहन थियेटर में आनन्द जी हरिदास सम्पत की अध्यक्षता में सम्मान। ७ सितम्बर १९२१ को पंजाब सभा, मारवाड़ी एसोसियेसन की बैठकों को सम्बोधित करते हैं। १ जनवरी १९२९ को बड़ाबाजार के हरिसन रोड पर शुद्ध खादी भण्डार का उद्घाटन करते हैं।

१९ जुलाई १९३४ की यात्रा में बेलूर के जीवनलाल मोतीचन्द के घर पर ठहरते हैं। दिन में हिन्दी दैनिक विश्वामित्र कार्यालय जाते हैं। २० जुलाई को मारवाड़ी बालिका विद्यालय की छात्राएँ गांधीजी से मिलकर उनके हरिजन फण्ड के लिये योगदान देती हैं।

२६ फरवरी १९४० को ढाका मेल से गांधी कलकत्ता आते हैं। दंगे की वजह से दमदम स्टेशन पर उतरते हैं और स्थानीय मारवाड़ी व्यापारी जी. डी. लोयलका के टालीगंज रिजेन्ट पार्क निवास स्थान पर ठहरते हैं। गांधीजी का बृजमोहन बिड़ला, लक्ष्मी निवास बिड़ला, बसन्त लाल मुरारका आदि ने दमदम स्टेशन पर स्वागत किया। २ मार्च की कलकत्ता यात्रा में गांधीजी बिड़ला पार्क में ठहरते है।

मारवाड़ी क्लब

१४ अगस्त १९४७ को मारवाड़ी क्लब (आजकल मेयो रोड स्थित राजस्थान क्लब) में बैठक में गांधीजी ने कहा – 'कल हम एक स्वतंत्र देश हो जायेंगे लेकिन आज रात को हिन्दुस्तान के दो भाग हो जायेंगे, यह दोनों खुशी का और गम का दिवस है।

२१ जुलाई १९३४ को कलकत्ता कारपोरेशन से भेंट-स्वरूप प्राप्त चाँदी की ट्रे आदि की गांधीजी नीलामी करते हैं, जिसे एच. पी. पोद्दार ५ रुपये में खरीदते हैं जो एक हरिजन फण्ड में दान दी जाती है।

गांधीजी की अन्तिम बंगाल यात्रा जो सबसे लम्बी थी, ९ अगस्त से ७ सितम्बर १९४७ तक ३० दिन के लिये थी। गांधीजी ने कुल ५६६ दिन बंगाल में बिताए। बंगाल और गांधीजी का अजीब रिश्ता था। अड़ेबाजी के लिए प्रसिद्ध तार्किक बंगालियों के लिये गांधीजी एक पसंदीदा विषय थे।

बिड़ला एवं गांधीजी

१९१५ में घनश्यामदास बिरला २१ वर्ष की आयु में पहली बार गांधीजी से मिलते हैं जब उनके कलकत्ता आगमन पर उनकी बग्गी गाड़ी को अन्य लोगों के साथ मिलकर खींचते हैं। उनका यह सम्बंध आजीवन रहता है। १९४०-४२ में गांधी बिड़ला के १८, गुरूसदय रोड, कलकत्ता निवास स्थान में १२ दिन ठहरते हैं। जनवरी १९४७ में बंगाल के दंगों को शान्त करने के लिये बापू नोआखाली-मासीगपुर जाते हैं, जहाँ खाने-पीने की देखभाल के लिये घनश्यामदास बिड़ला के निजी रसोईये हरिनाम को भेजा जाता है।

महात्मा गांधी २३ दिसम्बर १९२६ को सेठ जमुनालाल बजाज के साथ कलकत्ता पधारते हैं एवं श्री रघुमल खण्डेलवाल के १५, हरीश मुखर्जी रोड स्थित निवास स्थान पर ५ दिन ठहरते हैं। अगले दिन स्वामी श्रद्धानन्द की जघन्य हत्या के विरोध में बड़ाबाजार स्थित माहेश्वरी भवन में एक सभा को सम्बोधित करते हैं।

बंगाल विभाजन से चिंतित गांधीजी ९ मई १९४७ को पुनः कलकत्ता आते हैं। इस यात्रा के दौरान उनकी मुलाकात सर्वश्री सीताराम सेक्सरिया, तुलसीराम सरावगी एवं मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के पदाधिकारियों से होती है।

गांधीजी की बंगाल में मारवाड़ी मंत्री की सिफारिश

३० जून १९४७ को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने डॉ. प्रफुल्ल चन्द्र घोष को, जो स्वतंत्र भारत में पश्चिम बंगाल के प्रथम मुख्यमंत्री बने, एक पत्र लिखकर सुझाव दिया था कि सरदार बल्लभ भाई पटेल ने मुझे एक संदेश भेजा है कि आपके मंत्रिमण्डल में एक मारवाड़ी मंत्री – बद्री दास गोयनका या खेतान, होना चाहिये। मुझे लगता है यह करना उचित होगा, नहीं करना अनुचित होगा। लेकिन मुख्यमंत्री डॉ. घोष ने गांधीजी के सुझाव को स्वीकार नहीं किया।

मारवाड़ियों का बंगाल में राजनैतिक प्रतिनिधित्व एक अलग बड़ा प्रश्न है। संयोगवश १९७७ में रामकृष्ण सरावगी के बाद से गत ४२ वर्षों से कोई मारवाड़ी पश्चिम बंगाल में मंत्री पद पर नहीं है।

जचे ही कोनी

बाणियो व्यापार बिना,
दुल्हन सिणगार बिना
बीन बारात बिना
चौमासो बरसात बिना... जचे ही कोनी।

बाग माली बिना,
जीमणो थाली बिना,
कविता छंद बिना,
पुष्प सुगन्ध बिना... जचे ही कोनी।

मंदिर शंक बिना,
मोरियो पंख बिना,
घोड़ो चाल बिना,
गीत सुर-ताल बिना... जचे ही कोनी।

मर्द मूँछ बिना
डांगरों पूँछ बिना,
ब्राह्मण चोटी बिना,
पहलवान लंगोटी बिना... जचे ही कोनी।

रोटी भूख बिना,
खेजड़ी रूँख बिना,
चक्कु धार बिना,
पापड़ खार बिना... जचे ही कोनी।

घर लुगाई बिना,
सावण पुरवाई बिना
हिण्डो बाग बिना,
शिवजी नाग बिना... जचे ही कोनी।

कूवो पाणी बिना,
तेली घाणी बिना,
नारी लाज बिना,
संगीत साज बिना... जचे ही कोनी।

इत्र महक बिना
पंछी चहक बिना
मिनख परिवार बिना,
टाबर संस्कार बिना... जचे ही कोनी।

गांधी

– कन्हैया लाल सेठिया

महात्मा गांधी रै सुरगवास माथै देस री कांई दसा व्ही। सगलै जीव जगत माथै उण महान आत्मा रै गमन रो कांई असर व्हीयो, उणरौ वर्णन महाकवि पद्मश्री कन्हैयालाल सेठिया जी री रचना में घणौ मर्मस्पर्शी शब्दां में मिलै। जात-पांत रा भेद नै मेटण वालौ, मिनख मातर रौ सांचो मींत, महात्मा गांधी जैड़ा अवतारी इण धरती माथै आया न कोई आवै। एक गांधी रै मिटण सूं सगला री आंख्यां में आंसू है। मरतो मरतो ई गांधी एकता रौ पाठ पढाय ग्यौ।

आभै में उड़ता खग थमग्या
गेलै में बैंता पग थमग्या
हाको सो फूट्यो धरती पर
बै कुण गमग्या, बै कुण गमग्या?
ओ मिनख मरयोक मरयो पाखी?
सै साथै नाड़ कियां नाखी?
बा सिर कूटै है हिंदुआणी।
बा झुर झुर रोवै तुरकाणी।
इसड़ो कुण सजन सनेही हो
सगलां रा हिवड़ा डगमगग्या
बै कुण गमग्या, बै कुण गमग्या?
मिनखां रो रुलग्यो मिनखपणो
देवां री मिटगी संकलाई,
बापूजी सुरग सिधार गया
हूणी रै आडी के आई?
जीऊँला सौर पचीस बरस
बिसवास दिरार कियां ठगग्या।
गिगनार पड़ै लो अब नीचै
सतवादी वचनां स्यूं डिगग्या
बै कुण गमग्या, बै कुण गमग्या?
बापू सा मिनखां देही में
धरती पर मिनख नहीं आया,
आगै री पीढ़यां पूछै ली
के इस्या नखतरी जुग जाया?
ई एक जोत रै पलकै स्यूं
इतिहास सदा नै जगमगग्या
ईं एक मौत रै मोकै पर
सगलां रा आंसू रल मिलग्या
बै कुण गमग्या, बै कुण गमग्या?

SERVICES AT A GLANCE

- **Laboratory Services - Advanced Automatic Equipments**
  - **Radiology**
    - Digital X-Ray
    - Ultrasonography
    - Colour Doppler Study
  - **Cardiology**
    - ECG
    - Echo-Cardiography
    - Echo-Colour Doppler
    - Holter Monitoring
    - Treadmill Test (TMT)
    - Pulmonary Function Test (PFT)
  - **Neurology**
    - EMG
    - NCV
    - EEG
  - **Gastro Enterology:**
    - UGI Endoscopy
    - Colonoscopy
- **Dental General & Cosmetic**
- **Sleep Study (PSG)**
- **Eye Care Clinic**
- **Ent Care Clinic**
- **Gynae and Obstetric Care Clinic**
- **Consultation with leading Specialists**
- **Physiotherapy**
- **Personalised Care (Injection, Dressing, ECG etc.) at your doorstep**
- **Comprehensive Health Check-up Programmes**
- **Diabetes Care Clinic**

Home Blood Collection

(033) 4021-2525, 98300 19073, 97481 22475

98300 19073

Consultation | Diagnostics | Dentistry | Health Checks

Apollo Clinic
Expertise. Closer to you.

The Apollo Clinic

P-72, Prince Anwar Shah Road, Kolkata-700 045
Email : pashahroad@theapolloclinic.com

Kanoria Foundation
WORK WITH DEVOTION

HAPPINESS COMES IN MANY COLOURS. FIND YOURS IN THE Happy Rainbow Box.

SREI
Together We Make Tomorrow Happen

Srei, since three decades, has been in the business of financing infrastructure, developing projects and empowering entrepreneurs. Our Happy Rainbow Box is a collection of such happy and optimistic thoughts that have the potential to change the world for the better.

Infrastructure Project & Equipment Finance | Medical, IT, Agriculture & Mining Equipment Finance | Infrastructure Project Advisory, Development & Investments | Investment Banking | Insurance Broking

Log on to www.happyrainbowbox.com and #SpreadTheHappy

L&K | SAATCHI & SAATCHI

भारतीय लोकगीतों में गांधी

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के १५०वीं जन्म जयंती वर्ष के अवसर पर देश की स्वतंत्रता आन्दोलन में गांधीजी की भूमिका का स्मरण करने की आज आवश्यकता है। इस संबंध में आज अनेकों प्रश्नचिह्न खड़े किये जा रहे हैं। हम सभी जानते हैं कि गांधीजी के जीवन काल में तिलक, लाला लाजपत राय, विपिन बिहारी पाल, जवाहरलाल नेहरू, वल्लभभाई पटेल, सी. राजगोपालाचारी, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, सुभाषचन्द्र बोस, जयप्रकाश नारायण जैसे दिग्गज व्यक्तित्व मौजूद थे। उस समय उन्होंने गांधीजी के विषय में जो विचार व्यक्त किये थे, वह अत्यंत ही महत्वपूर्ण हैं। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि गांधी जी देश के समूचे जनमानस के उपर छाये हुए थे। इसका ज्वलंत उदाहरण देश के सभी क्षेत्रों के लोकगीतों में उनके उल्लेख से समझ में आता है। विभिन्न क्षेत्रों के लोकगीतों को विभिन्न स्त्रोतों से हमने संकलित करने का प्रयास किया है। ये वे गीत हैं जो गाँवों में, शहरों में, स्त्री-पुरुष के जुबान पर चढ़े हुए थे। ये लोकगीत गांधीजी की लोकप्रियता प्रदर्शित करते हैं। इनसे यह पता चलता है कि गांधीजी के अवदान उनके जीवनकाल में ही किंवदंती बन गये थे। गांधीजी स्वतंत्रता आंदोलन को अभूतपूर्व ढंग से जन-आंदोलन में तब्दील करने में कामयाब हुए थे। इसी कारण सोते-जागते, उठते-बैठते, जनमानस में स्वतंत्रता की ललक जग गई थी।

भारत छोड़ो आंदोलन का आह्वान लोकगीतकारों ने किया –

भारत छोड़ो हे अंग्रेजों, चली जोर से आँधी,
लंदन भागे, जीति गए गाँधी, नजरिया हमरी भारत पे रही।

हे अंग्रेजों! भारत छोड़ो, स्वराज्य आंदोलन की आँधी जोर से चल पड़ी है। अंग्रेज लंदन भाग गए, गांधी की विजय हुई, सब की दृष्टि भारत पर थी।

हरियाणा के लोकगीत की बानगी :–

गाँधी ने अंग्रेज भगाया अर भारत का मान बचाया।
गंगा जल का लोट्टा। गाँधी काट गिया टोट्टा।
जल भर्या लोट्टा चांदी का। यू राज महात्मा गाँधी का।।
देसी घी की भरी से कोल्ली। गांधी बाब्बू की जै बोल्ली।।
भरी थाली यो चाँदी की। जय बोलो महात्मा गाँधी की।।

हरियाणा के एक और लोकगीत का स्वर देखिये :–

घर घर लन्दन मे भो रोवैं, गांधी बन गया गले का हार
सरकार खड़ी है घुरने टेबे, बोले उसके वाजे हथियार
हाहाकर मचे लन्दन में, मैणा अब रुक गए करतार।

आधुनिक युग में राजनैतिक चेतना का सूत्रपात गांधीजी के स्वतंत्रता आंदोलन से होता है। लोक-मानस में गांधीजी का अत्यधिक प्रभाव तत्कालीन लोकगीतों में दिखाई पड़ता है। लोकगायकों ने अपनी जोशीली वाणी में क्रांतिकारियों का संदेश घर-घर पहुँचाया। स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित कुछ उदाहरण है –

कुलवधुओं का स्वप्न है कि मेरा प्रिय गांधी के स्वराज्य-स्वप्न को पूरा करेगा। वह बापू को आश्वासन देती है कि मेरा प्रिय भोजन, वस्त्र का उपभोग मिल-बाँटकर करेगा, चरखा कातकर, वस्त्र बनाकर, सबको पहनाकर तब स्वयं पहनेगा –

गाँधी तेरो सुराज सपनवाँ हरि मोर पूरा करिहै ना।

गाँधी की जय-जयकार लोकगीतों में भी गूँज उठी थी –

एक छोटी चवन्नी चाँदी की, जय बोलो महात्मा गाँधी की।

जैसे चवन्नी देखने में छोटी लगती है, वैसे ही बापू भी देखने में बहुत साधारण लगते हैं, वे महानता का मुखौटा नहीं लगाते, लेकिन सारा लोक उनकी जय-जयकार करता है।

स्वराज्य और चरखा आंदोलन का गहरा प्रभाव भी लोकगीतों पर पड़ा। स्त्रियों में भी बल और शौर्य का स्वाभिमान जगा –

अपने हाथे चरखा चलउबै, हमार कोउ का करिहै,
गाँधी बाबा से लगन लगउबै, हमरा कोउ का करिहै।
अपने हात से चरखा चलाऊँगा मेरा कोई क्या कर लेगा।
गाँधी बाबा से लगन लगाऊँगी, मेरा कोई क्या कर लेगा।

चरखे का तार न टूटने पाए, वह लोक की आन बन गया–

मोरे चरखे क टूटै न तार, चरखवा चालू रहे।

असहयोग आंदोलन से प्रभावित होकर स्वराज्य की कामना की गई है। सारे भौतिक सुखों की चाह आजादी की चाह में खो गई। लोकगीतों में फिरंगियों की अवमानना भारतीय नारियों ने भी की –

अपने पिया कै पनही ढोवइबै, फिरंगिया भागा जाय,
अपने ससुर की पनही से पिटउबै, फिरंगिया भागा जाय।।

अपने पिया का जूता फिरंगी से ढोवाऊँगी, ससुर के जूते से उसकी पिटाई कराऊँगी, वह भाग जाएगा।

हरियाणा का एक और लोकगीत :–

तेरे घर में घुस गए चोर, गाँधी दीवा दिखाइए रे।
तेरे तो भाई गाँधी टोपी आले, ये टोप आले कौण,
गाँधी दीवा दिखाईए रे।
तेरे तो भाई गाँधी धोती आले, ये पतलून आले कौण,
गाँधी दीवा दिखाइए रे।
तेरे तो भाई गाँधी लाठी आले, ते बंदूख आले कौण,
गाँधी दीवा दिखाइए रे।

इसी प्रकार गांधी की बानी दुनिया में पसरी, अवधी लोकगीतों ने इस बात का गा-गाकर प्रसार किया। किंतु लोकगीतों में महात्मा गांधी को भगवान् का अवतार मानकर उनकी तुलना राम और कृष्ण से की गई है –

महात्मा गांधी की दृष्टि में खादी बुनना, पहनना एक वृहद

दृष्टि का विस्तार है। छत्तीसगढ़िया लोकगीतों में गांधी जी की खादी पहनने संबंधी सीख को इस तरह से आत्मसात किया गया है।

गांधीजी हर काबर कहि हैं / गांव-गांव में जाके खास।
खादी पहिरै, खादी पहिरै / खेती में तुम बोवौ कपास।
रहटा ला तुम रोज चलावौ / तब स्वतंत्र बन जाहौं आप।
तब स्वतंत्र जीवन भर जाही, / जग जाही हमरा देस
खाना अपना पहरना / अपन सुख स्वराज तब का है शेष।

बुंदेली लोकगीत में भी सूत कातकर समस्त अभावों को दूर करने की बात की गई है –

गांधी के गांव में सूत कते रे / सूत कते रे भैया /
सूत कते रे।
बेकारी निर्धनता जरे बरे सूखे
अभावों को दुखियारों को भूल भगे रे,
सूत कते रे भैया / सूत कते रे।

छत्तीसगढ़िया के लोकगीत में अहिंसा का प्रभाव कुछ ऐसा है कि बकरी और बाघ एक ही घाट पर पानी पीते हैं। हिंदू और पठान दोनों महात्मा गांधी के इस अवदान को मानते हैं कि दुःखी भारत का बेड़ा पार लगाने के लिए ही गांधी का अवतार हुआ है:

बापूजी पढ़ाईस अहिंसा के पाठ
छेरी बघवा ले पानी पियावस, कै घाट
तहिंच हरिजन के हवस भगवान
तोर नाम गा रहथें गा हिंदू और पठान
आजादी खातिर भईस अवतार
दुखी भारत के बेड़ा लगावे पार
सुनो ग भैया चिटिक देके धियान
तकलीफ ला अपन सभो करिथी बखान
तरसथन हम भारत के आज हम किसान।

गांधी को धरती के आंगन में एक वृक्ष के समान मानते हुए लोकगायक कहता है –

धरती के आंगन मा गांधी के बिरवा
फुलगे सजा फुलगे। खुलगे माटी के भाग
धरम-करम के मितिहा बनगे
पहरा हिम कस ध्वती तन के।
बादर विपत के बरस कै झरगै
दया माया के रुख फरगे।
देवता आके होइस सियान
भागिस कपटी लेके परान।
धरती के अंगना मा गांधी के बिरवा फुलगे राजा फुलगे।
खुलगे माटी के भाग धरम करम के मातिहा बनगे।

जाति-भेद मिटाने के प्रयासों का वर्णन बुंदेली लोकगीत में सुंदर ढंग से किया गया है :–

जात पात को भेद भगादव गांधी ने
अपने सिर पे मैला ढोके मेहतर गरे लगा रए रे।
दलितों खों छाती से चिपका अपने जरें बिठा लए रे।
ऊंचे पद खों छोड़ छाड़ के
समता को सद्भाव जगादव गांधी ने
जात पांत को भेद भगादव गांधी ने
जोर जुलम अन्याय के ऊपर
अनसन उनने ठानो
सब धर्मों को एक धर्म जो
मानवता कौ मानो रे।
सत्य अहिंसा की धरती पर
प्रेम प्यार को बीज उगादव गांधी ने
जात पात को भेद भगादव गांधी ने।

एक बैगा लोकगीत में गांधी इस तरह से मौजूद हैं-

देश ला काम आवो बाय देश ला जिताबो रे।
डोंगरी पहार रे, गांधी संग जावो रे।।
फिरंगी ला भगाओ बाय देश ला जितावो रे।
डोंगरी पहार रे, गांदी संग जावो रे।।

कोरकू लोकगीत में गांधी के सत्याग्रह को याद किया गया है :

गांधी बाबा, गांधी बाबा आले आरजो आयुमे।
आले सेबय कोरकू नी, मांडी आम आयुमे।।
आम का आले आयोम बाबा डोंगरेन सत्याग्रह सेबेय कू।
झट्टो पट्टो इंगरेज कू नी, आले डेसोन नामा हातरे।

कहने को महात्मा गांधी आज हमारे बीच नहीं हैं। लेकिन स्वाधीनता संग्राम में उन्होंने जिस तरह से लोक चेतना को ब्रिटिश साम्राज्य से मुक्ति के लिए अभिव्यक्ति दी वह देश और दुनिया में एक मिसाल है।

अवतार महात्मा गाँधी कै, भारत कै भार उतारै काँ,
सिरी राम के हाथ म धनुहा बान, श्रीकृष्ण के हाथे मुरली,
गान्हीं के हाथ म चरखा बा, भारत कै भार उतारै काँ।
सिरी राम के साथे बानर सेना, और लखन यस भइया,
सिरी कृस्न के साथे ग्वाल बाल अउर बलदाऊ भइया,
गान्ही के साथे जनता बा और जवाहर लाल, पटेल
सिरी राम मारे रावण काँ सिरी किसन मारे कंसा काँ,
गाँधीजी जग माँ परगट भए, अन्यायी राज हटावै काँ

महात्मा गांधी का अवतार भारत का भार उतारने के लिए हुआ। श्रीराम के हाथ में धनुष-बाण और श्रीकृष्ण के हाथ में बंशी थी। गाँधी के हाथ में चरखा है। श्रीराम के साथ वानर सेना और लक्ष्मण थे। श्रीकृष्ण के साथ ग्वाल-बाल तथा बलराम थे। गांधी के साथ जनता है और जवाहर, पटेल हैं। श्रीराम और श्रीकृष्ण ने रावण और कंस रूपी अन्यायी राजा को मारा, गांधीजी संसार में प्रकट हुए हैं अन्यायी अंग्रेजी राज हटाने के लिए।

प्रेरणा के पथिक

– शैरिल शर्मा

गांधी जी ने 'अहिंसा' के सिद्धांतों पर 'सत्याग्रह' की नींव रखी। इस सुकृत्य से जनता को सामान्य नागरिक अधिकारों एवं स्वतंत्रता के लिए प्रेरित किया और बड़ी तादाद में लोगों ने यथासंभव योगदान दिया। लोक की वेदना लोक की भाषा में ही ठीक-ठीक व्यक्त होती है। यहाँ तक कि लोक पर हुआ प्रभाव लोक के माध्यम से स्पष्ट तौर पर सामने आया और उसी में सुनाई पड़ती है जीवन की प्राकृत लय और उसकी भीतरी धड़कन।

पारंपरिक लोकगीतों जैसे विवाह गीत, सोहर, पुरबी, कजरी में महात्मा गांधी शामिल होने लगे और दूसरा ये कि उस समय की लोक बोली के रचनाकार गांधीजी पर अलग-अलग तरीके से गीत लिखने लगे। उस दौर में भोजपुरी का यह गीत बहुत मशहूर हुआ, **'मोरे चरखा के टूटे न तार, चरखवा चालू रहे। गान्ही बाबा बनलै दुलहवा, अरे दुल्हिन बनी सरकार, चरखवा चालू रहे...'।**

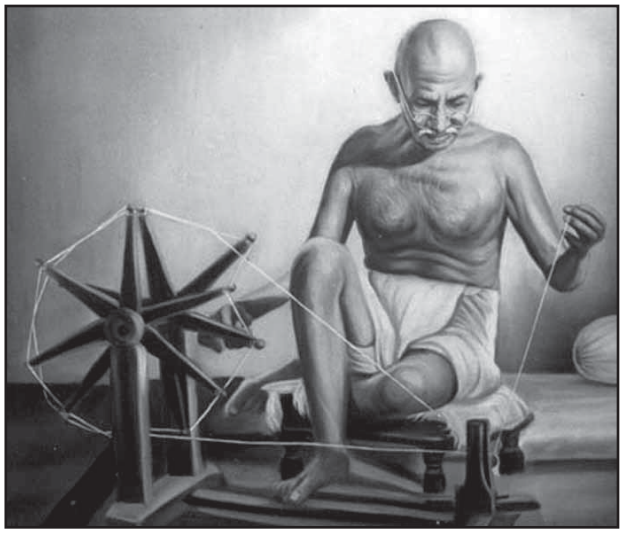

उस जमाने में गांवों में यह मशहूर विवाह गीत बन गया था जिसमें गांधी जी को दूल्हा बनाया गया और अंग्रेजों को बाराती।

उसी समय का यह गीत भी है– **'काटब चरखा, सजन तुहु काट, मिलही एहि से सुरजवा न हो, पिया मत जा पुरूबवा के देसवा न हो।'** इस गीत में आमतौर पर मजदूरों की महिलाओं के स्वर को प्रतिध्वनित किया गया। उस समय जब मजदूर पूरब देस यानी कोलकाता, असम कमाने जाते थे, तो उनकी पत्नियाँ गायन करती थीं कि परदेस क्या करने जाना है... घर में ही रहकर चरखा चलाओ, हम आपके साथ हैं। हम भी चलाएंगे और सहयोग देंगे, क्योंकि गांधीजी कह रहे हैं कि इससे कमाई भी होगी, स्वराज भी आएगा।

'चंपारण-आंदोलन' के दौरान किसानों पर ४६ प्रकार के टैक्स लगाए गए थे, जिनकी वजह से उनका जीना दूभर हो गया था। भोजपुरी के लोकगीत की इन पंक्तियों में जुल्मी टैक्स और कानूनों को रद्द करने हेतु लोकमानस की व्यग्रता पूरी तीव्रता में अभिव्यक्त हुई है –

स्वाधीनता हमनी के, नामो के रहल नाहीं।
अइसन कानून के बा जाल रे फिरंगिया।।
जुलुमी टिकस अउर कानूनवा के रद्द कइ दे।
भारत का दइ दे सुराज रे फिरंगिया।।

अपने इस नेता के पुरुषार्थ और मर्यादित नेतृत्व पर भारतीय जनता को अखंड विश्वास था। यह विश्वास एक भोजपुरी लोकगीत की इन पंक्तियों में स्पष्टत दृष्टिगोचर है -

गांधी के आइल जमाना हो, देवर जेलखाना अब गइले,
जब से तपे सरकार बहादुर, भारत मरे बिनु दाना,
हाथ हथकड़िया, गोड़वा में बेंड़िया, देसवा बनि हो गइल दिवाना,
धरम राखि लेहु भारत भइया, चरखा चलावहु मस्ताना।

'चरखा' गांधीजी के स्वावलंबन के सिद्धांत का प्रतीक बन गया था। गांधीजी और उनके चरखे के प्रति लोकमानस में श्रद्धा का भाव शुरू से रहा है। लोकगीत की इन पंक्तियों में चरखे के चालू रहने में ही स्वराज का सपना फलीभूत होता दीखता है –

देखो टूटे न चरखा के तार, चरखवा चालू रहै।
गांधी महात्मा दूल्हा बने हैं, दुलहिन बनी सरकार,
सब रे वालंटियर बने बराती, नउवा बने थानेदार।
गांधी महात्मा नेग ला मचले, दहेजे में मांगें सुराज,
ठाड़ी गवरमेंट बिनती सुनानवै, जीजा गौने में देबै सुराज।

लोग गांधीजी की बात मानते हुए विदेशी कपड़ों का त्याग करने के लिए स्वतःस्फूर्त रूप से तैयार रहते थे। लोकगीत की इन पंक्तियों में लोकमानस की यह धारणा बखूबी चित्रित हुई है -

मानऽ गांधी के बचनवा दुखवा हो जइहें सपनवा
तन से उतार कपड़ा विदेसी, खद्दर के कइ ल धरनवा।

एक चना बेचनेवाले के गीत में 'सत्याग्रह-आंदोलन' की मनोभावना को देखा-परखा जा सकता है -

चना जोर गरम बाबू मैं लाया मजेदार चना जोर गरम।
चने को गांधीजी ने खाया
जा के डंडी नमक बनाया
सत्याग्रह संग्राम चलाया, चना जोर गरम।

'सत्याग्रह-आंदोलन' के क्रम में जेल गए एक सत्याग्रही के लिए उसकी धर्मपत्नी की चिंता इन पंक्तियों में द्रष्टव्य है -

सत्याग्रह के लड़ाई, सईयां जेहल गईले भाई,
रजऊ कइसे होईहें ना।
ओही जेहल के कोठरिया रजऊ कइसे होईहें ना।
गोड़वा में बेड़िया, हाथ पड़ली हथकड़िया
रजऊ कइसे चलिहें ना।

महात्मा गांधी और उनके 'चंपारण-सत्याग्रह' के संदेशों को आम जनमानस में उतारने में लोकगीतों की महत्वपूर्ण भूमिका रही

है। महात्मा गांधी ने हमें जीवन की कठिन से कठिन परिस्थितियों में धैर्यपूर्वक उभरने की 'सत्याग्रह' नामक एक ऐसी राह दिखाई जो दुर्गम तो जरूर है, पर अंत में विजय घोष करती प्रतीत होती है। सत्याग्रह का मूल अर्थ ही सत्य को पकड़े रहना है।

सत्याग्रह शब्द खुद को परिभाषित करते हुए कहता है हमें सत्य के प्रति आग्रह करना चाहिए। महात्मा गांधी ने एक समय कहा था कि सत्याग्रह में एक पद 'प्रेम' अध्याहृत है। 'सत्य-प्रेम-आग्रह' यानी सत्य के लिए प्रेम द्वारा आग्रह। इस राह में आते कष्ट एवं पीड़ा से भला कौन अपरिचित रहा होगा। सत्याग्रह की संक्षिप्त व्याख्या महात्मा गांधी जी ने कुछ इस प्रकार दी थी– 'यह एक ऐसा आंदोलन है जो पूरी तरह सच्चाई पर कायम है और हिंसा के उपायों के एवज में चलाया जा रहा है। अहिंसा सत्याग्रह दर्शन का महत्वपूर्ण तत्व है।' गांधीजी के शब्दों में 'अहिंसा' किसी को चोट ना पहुँचाने की नकारात्मक वृत्तिमात्र नहीं बल्कि वह सक्रिय प्रेम की विधायक वृत्ति है।

सत्य के पालन हेतु अगर मृत्यु का वरण भी कर लिया जाए तो भी सौदा घाटे का नहीं है। सत्य और प्रेम के पुजारी के शस्त्रागार में 'उपवास' सबसे शक्तिशाली शस्त्र है। मृत्युपर्यन्त कष्ट सहन करने की बात है, इसलिए मृत्युपर्यन्त उपवास भी सत्याग्रह का अन्तिम अस्त्र है। अगर यही उपवास दूसरों को मजबूर करने के लिए जब आत्मपीड़न का रूप ग्रहण कर ले तो यह त्याज्य है। क्योंकि सौम्यतम सत्याग्रह का यह उपवास-रूपी अंतिम स्थान एक प्रतिकार पद्धति ही नहीं, एक विशिष्ट जीवन पद्धति भी है।

वैसे सत्याग्रह में कुछ नया नहीं है, कौटुंबिक जीवन का राजनीतिक जीवन में प्रसार मात्र है। कहा जाता है, इसमें गांधी जी की देन यही है कि उन्होंने सत्याग्रह के विचार का राजनीतिक जीवन में सामूहिक तौर पर भरपूर प्रयोग किया। आम जनता 'गांधी जी' को 'महात्मा गांधी' के नाम से भी जानती है। 'महात्मा' शब्द सम्मान का सूचक है जो आमतौर पर एक सज्जन व्यक्तित्व को दर्शाता है। गांधी जी की सर्वप्रथम महात्मा किसने कहा इस बात को लेकर एक मत आज तक दृष्टि में नहीं आया। यह मुद्दा दो किस्सों में उलझ के रह गया। पहला तो ये कि १२ अप्रैल सन् १९१९ को रविन्द्रनाथ टैगोर ने गांधी जी को एक खत लिखा था जिसमें उन्होंने गांधी जी को 'महात्मा' कह कर संबोधित किया गया था। दूसरा, विद्वतजनों का कहना है कि सौराष्ट्र की गोंडाल नामक रियासत में गांधीजी के सम्मान में एक सार्वजनिक सभा की गई जिसमें गोंडाल के दीवान रणछोड़ दास पटवारी की अध्यक्षता में राजवैद्य जीवराम कालिदास ने उन्हें 'महात्मा' की उपाधि से विभूषित किया।

गांधी को उनके जीवन-काल में ही एक अवतार मान लिया गया। लोगों ने उनको उसी रूप में देखा। उनको एक उद्धारक के रूप में माना गया। इसलिए उनके जीवनकाल में ही उनकी मूर्तियाँ बनीं और वे लोकगीत का भी हिस्सा बने। आम जनता से लेकर प्रसिद्ध साहित्यकारों तक ने उन्हें संत की उपाधि दी। रोजमर्रा के जीवन में जब कोई व्यक्ति या संस्थान विशेष गांधी जी द्वारा स्थापित मूल्यों और आदर्शों का अनुपालन करता है तो लोग उसे गांधीवादी कहकर संबोधित किया करते हैं।

('स्वर सरिता' से साभार)

दिवाली के दीप जलाओ

भेदभाव की खाई पाटो
अहं की दीवार गिराओ
अंतर्मन को रोशन करके
दिवाली के दीप जलाओ।

सब पर खुलकर स्नेह लुटाओ
स्वार्थ मोह बंधन सब तोड़ो
जिसमें सब संग दिखते हों
कुछ ऐसी तस्वीर बनाओ।

जीर्ण-शीर्ण को बाहर करके
जीवन को नया सजाओ
दीन दुखी को मिले सहारा
अपना ऐसा स्वभाव बनाओ।

भटके को राह दिखाओ
गिरे हुओं को उठाओ
जहाँ कहीं भी दिखे अंधेरा
दिवाली के दीप जलाओ।

भूखों को रोटी देना है
नंगों को लिवास पहनाओ
बेसहारों को सहारा देकर
जीवन अपना सफल बनाओ।

अज्ञान के तम को भेदो
सोच को विस्तृत बनाओ
कूपमंडूकता को दूर करके
ज्ञान की ज्योति फैलाओ।

विनयावनत कामना मेरी
तमसो मां ज्योतिर्गमय
स्वयं ही दीप बनकर
जग को सुंदर राह दिखाओ।

दिवाली की रात है आई
नफरत की अमावस है छाई
प्रेम सौहार्द का तेल भरकर
खुशियों के दीप जलाओ।

ISO 9001 Certified

ORR TECHNOLOGY

SKIPPER

PIPES

"FIXED FOR LIFE"

COMPLETE RANGE OF PIPES & FITTINGS

CPVC | UPVC | SWR | UGD | HDPE | BOREWELL | AGRICULTURE

www.skipperlimited.com | Toll Free : 1800 120 6842

With Best compliments From

M/s. A. P. Credit Pvt. Ltd.

3/1, Dr. U. N. Brahmachari Street

Kolkata-700017

Ph: 033-22871221/1224

राजिया रे सोरठे

– कृपाराम बारहठ

खळ धूंकल कर खाय, हाथळ बल मोताहळां।
जो नाहर मर जाय, रज त्रण भकै न राजिया।।

सिंह युद्ध में अपने पंजो से शत्रु हाथियों के मुक्ताफल-युक्त मस्तक विदीर्ण कर ही उन्हें खाता है। वह चाहे भूख से मर जाय, किंतु घास कभी नहीं खायेगा।

नभचर विहंग निरास, बिन हिम्मत लाखां वहै।
बाज त्रपत कर वास, रजपूती सूं राजिया।।

आकाश में लाखों पक्षी हिम्मत के बिना (भूख के मारे) उड़ते रहते हैं, किन्तु हे राजिया! बाज अपने पराक्रम से ही पक्षियों का शिकार कर तृप्त जीवन जीता है।

घेर सबल गजराज, केहर पळ गजकां करै।
कोसठ करकम काज, रिगता ही रै राजिया।।

सिंह बलवान हाथी को घेर कर और मारकर उसके माँस का आहार करता है किंतु हे राजिया! उसी वक्त गीदड़ हड्डियों के ढाँचे के लिए ही ललचाते रहते हैं।

आछा जुध अणपार, धार खगां सनमुख धसै।
भोग हुवे भरतार, रसा जिके नर राजिया।।

जो लोक अनेक बड़े युद्धों में तलवारों की धारों के सन्मुख निर्भीक होकर बढ़ते हैं, वे ही वीर भरतार बनकर इस पृथ्वी को भोगते हैं।

दांम न होय उदास, मतलब गुण गाहक मिनख।
ओखद रो कड़वास, रोगी गिणै न राजिया।।

गुणग्राहक मनुष्य अपनी लक्ष्य-सिद्धि के लिए किसी भी कठिनाई से निराश नहीं होता, ठीक उसी तरह, जिस तरह हे राजिया! रोगी व्यक्ति औषध के कड़वेपन की परवाह नहीं करता।

गह भरियो गजराज, मह पर वह आपह मतै।
कुकरिया बेकाज, रुगड़ भुसै किम राजिया।।

मस्त गजराज तो अपनी मर्जी से पृथ्वी पर हर जगह विचरण करता है किंतु हे राजिया! ये मूर्ख कुत्ते व्यर्थ ही उसे देखकर क्यों भौंकते हैं।

असली री औलाद, खून करयां न करै खता।
वाहै वद वद वाद, रोढ़ दुलातां राजिया।।

शुद्ध कुल में जन्म लेने वाला तो अपराध करने पर भी झगड़ा नहीं करता, जबकि अकुलीन व्यक्ति अकारण ही झगड़े करता रहता है। ठीक उसी तरह जिस तरह हे राजिया! खच्चर व्यर्थ ही बढ़-बढ़ कर दुलत्तियाँ झाड़ता रहता है।

ईणही सूं अवदात, कहणी सोच विचार कर।
बे मौसर री बात, रूडी लगै न राजिया।।

सोच-समझकर कही जाने वाली बात ही हितकरणी होती है, हे राजिया! बिना मौके कही गई बात किसी को अच्छी नहीं लगती है।

बिन मतलब बिन भेद, केई पटक्या रांम का।
खोटी कहै निखेद, रांमत करता राजिया।।

कई राम के मारे दुष्ट लोग ऐसे होते हैं, जो बिना मतलब और बिना विचार किए हँसी-ठिठोली में ही कितनी अप्रिय एवं अनुचित बातें कह देते हैं।

पल-पल में कर प्यार, पल-पल में पलटे परा।
ऐ मतलब रा यार, रहै न छाना राजिया।।

जो लोग पल-पल में प्यार का प्रदर्शन करते हैं और पल-पल में बदल भी जाते हैं, हे राजिया! ऐसे मतलबी यार दोस्त छिपे नहीं रह सकते वे तुरंत ही पहचाने जाते हैं।

सार तथा अण सार, थेटू गळ बंधियों थकौ।
बड़ा सरम चौ भार, राळ्यं सरै न राजिया।।

परम्परा के रूप में जो भी सारयुक्त अथवा सारहीन तत्व हमारे गले बँध गया है, पूर्वजों की लाज-मर्यादा के उस भार को फेंकने से काम नहीं चलता उसे तो निभाना ही पड़ता है।

पहली कियां उपाव, दव दुस्मण आमय दटे।
प्रचंड हुआ विस वाव, रोभा घालै राजिया।।

अग्नि, दुश्मन और रोग तो आरंभ में ही दबाने से दब जाते हैं, लेकिन हे राजिया! विष (शत्रुता एवं रोग) और वायु प्रचंड हो जाने पर सदा कष्ट देते हैं।

एक जतन सत एह, कूकर कुगंध कुमांणसां।
छेड़ न लीजे छेह, रैवण दीजे राजिया।।

कुत्ता, दुर्गन्ध और दुष्टजन से बचने का एकमात्र उपाय यही है कि उन्हें छेड़ा न जाय और ज्यों का त्यों पड़ा रहने दिया जाय।

नरां नखत परवाण, ज्याँ ऊभा संके जगत।
भोजन तपै न भांण, रावण मरता राजिया।।

मनुष्य की महिमा उसके नक्षत्र से होती है, इसलिये उसके जीते जी संसार उससे भय खाता है। रावण जैसे प्रतापी की मृत्यु होते ही सूर्य ने उसके रसोई घर में तपना (भोजन बनाना) बंद कर दिया था।

हीमत कीमत होय, बिन हिमत कीमत नही।
करै न आदर कोय, रद कागद ज्यूँ राजिया।।

हिम्मत से मनुष्य का मूल्यांकन होता है, अतः पुरुषार्थहीन व्यक्ति का कोई महत्व नहीं होता है। राजिया! साहस रहित व्यक्ति रद्दी कागज की भांति होता है जिसका कोई भी आदर नहीं करता।

देखै नही कदास, नह्यै कर कुनफौ नफ़ौ।
रोळां रो इकलास, रौळ मचावै राजिया।।

जो लोग हानि-लाभ की ओर कभी देखते नहीं, ऐसे विचारहीन लोगों से मेल-मिलाप अंततः उपद्रव ही पैदा करता है।

देव-स्तुति

[गतांक से आगे]

– डॉ. जुगल किशोर सर्राफ

ब्रह्म संहिता

वेणुं क्वणन्तम् अरविन्ददलायताक्षं
बर्हावतंसमसिताम्बुदसुन्दरांगम्।
कन्दर्पकोटिकमनीयविशेषशोभं
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।

मैं उन आदि भगवान् गोविन्द की पूजा करता हूँ, जो अपनी दिव्य वंशी बजाते हैं। उनकी नयन कमल के फूलों के सदृश हैं। वे मोरपंखों से सुशोभित हैं, और उनके शरीर का रंग नवीन श्याम बादल के जैसा है। उनका शारीरिक गठन करोड़ों कामदेवों से भी अधिक सुंदर है।

अद्वैतमच्युतमनादिमनन्तरूपम्
आद्यं पुराणपुरुषं नवयौवनं च।
वेदेषु दुर्लभमदुर्लभमात्मभक्तौ
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।

मैं उन आदि भगवान् गोविन्द की पूजा करता हूँ, जो असंख्य स्वांशों से अभिन्न हैं। वे अच्युत, आदि तथा असीम हैं एवं नित्य स्वरूपों वाले हैं। यद्यपि वे सबसे प्राचीन पुरुष हैं, किन्तु वे सर्वदा नवीन तथा युवा रहते हैं।

श्रीभगवानुवाच

कोश ते पादसरोजभाजां
सुदुर्लभोऽर्थेषु चतुर्ष्वपीह।
तथापि नाहं प्रवृणोमि भूमन्
भवत्पदाम्भोजनिषेवणोत्सुकः।।

हे प्रभु, जो भक्तगण आपके दिव्य चरणकमलों की अतुलनीय प्रेम सेवा में संलग्न हुए हैं उन्हें धर्म, अर्थ, ज्ञान और मुक्ति के इन चार पुरुषार्थों के क्षेत्र में कुछ भी प्राप्त करने में कोई कठिनाई नहीं होती। लेकिन हे महात्मन्, जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है मैंने केवल आपके दिव्य चरणकमलों की अतुलनीय प्रेम सेवा में शामिल होने को श्रेयस्कर माना है।

देवा ऊचुः

नमाम ते देव पदारविन्द।
प्रपन्नतापीपशमातप्रत्रम्।
यन्मूलकेता यतयोऽञ्जसोरु
संसारदुःखं बहिरुत्क्षिपन्ति।।

हे प्रभु, आपके चरण कमल शरणागतों के लिए छाते के सदृश है। जो संसार के सभी प्रकार कष्टों से उनकी रक्षा करते हैं। समस्त मुनिगण उस आश्रय के अन्तर्गत सभी भौतिक कष्टों को निकाल फेंकते हैं। अतएव हम आपके चरणकमलों को सादर नमस्कार करते हैं।

ततो वयं मत्प्रमुखा यदर्थे
बभूविमात्मन्करवाम किं ते।
त्वं नः स्वचक्षुः परिदेहि शक्त्या
देव क्रियार्थे यदनुग्रहाणाम्।।

हे परम प्रभु, कृपया निर्देश दें कि, महत्-तत्व से प्रारंभ में उत्पन्न हुए हम सब किस तरह से कार्य करें। कृपया हमें अपना संपूर्ण ज्ञान तथा सामर्थ्य प्रदान करें ताकि हम परवर्ती सृष्टि के विभिन्न विभागों में आपकी सेवा प्रदान कर सकें।

ब्रह्म संहिता

यः कारणार्णवजले भजति स्म योग-
निद्रामनन्तजगदंडसरोमकूपः।
आधारशक्तिमवलम्ब्य परां स्वमूर्तिं
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।

गोविन्द, सर्वोच्च तथा पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् जो अपनी उस निद्रा के दौरान असंख्य ब्रह्मांडो की सृष्टि करने के लिए कारणार्णव में अनन्तकाल तक सोते रहते हैं। वे अपनी आन्तरिक शक्ति द्वारा जल पर लेटे रहते हैं। मैं उन आदि भगवान् गोविन्द की पूजा करता हूँ।

यस्यैकनिश्वसितकालमथावलम्ब्य
जीवन्ति लोमविलजा जगदंडनाथाः।
विष्णुर्महान् स इह यस्य कलाविशेषो
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।

उनके श्वास लेने के कारण असंख्य ब्रह्मांडों की उत्पत्ति होती है। और उनके श्वांस निकलते ही समस्त ब्रह्मांडो के स्वामियों का विनाश हो जाता है। भगवान् का वह श्वांस महाविष्णु कहलाता है। और वे भगवान् कृष्ण का अंश के अंश होते हैं। मैं उन आदि भगवान् गोविन्द की पूजा करता हूँ।

ब्रह्मोवाच

रूपं यदेतदवबोधरसोदयेन
शश्वन्निवृत्ततमसः सदनुग्रहाय।
आदौ गृहीतमवतारशतैकबीजं
यन्नाभिपद्मभवनादहमाविरासम्।।

मैं जिस रूप को देख रहा हूँ वह भौतिक प्रदूषण से सर्वथा मुक्त है और भक्तों पर कृपा दिखाने के लिए आंतरिक शक्ति की अभिव्यक्ति के रूप में प्रकट हुआ है। यह अवतार कई अन्य अवतारों की उत्पत्ति है और मैं स्वयं आपके नाभि रूप घर से पैदा हुए कमल फूल से पैदा हुआ हूँ।

सम्मेलन में नए सदस्यों का स्वागत!

आजीवन सदस्य

श्री कृष्ण कन्हैया खेतान द्वारा - मेडीसिन सेन्टर बलवा हाल्ट, सहरसा, बिहार	**श्री सीताराम खेतान** मेन रोड, बलवा हाल्ट सहरसा, बिहार	**श्री कमल किशोर खेतान** मे. अंजु मेडीसिन, बलवा हाल्ट, सहरसा, बिहार	**श्री अनिल कुमार खेतान** मे. दुल्हन ज्वेर्ल्स स्टोर बलवा हाल्ट, सहरसा, बिहार	**श्री अमित कुमार दहलान** दहलान चौक सहरसा, बिहार
श्री अमन खेतान मे. अमन इलेक्ट्रोनिक्स कपड़ा पट्टी, सहरसा, बिहार	**श्री अजय कुमार अग्रवाल** मे. शिव शक्ती आटोमोबाइल्स पुरब बाजार, सहरसा, बिहार	**श्री आशिष कुमार** मे. चौधरी हैंडलूम सहरसा, बिहार	**श्रीमती प्रिया देवी** मे. श्री श्याम ट्रेडर्स माहरुफगंज रोड, सहरसा बिहार	**श्रीमती नीलम सुरेका** मे. सुरेका सैलून, टोकजी रोड, सहरसा, बिहार
श्री साकेत कुमार फतेहपुरिया पुरब बाजार, वार्ड नं.-३० सहरसा, बिहार	**श्री दीपक प्रकाश** मे. नीलम बाम्बे डाईंग डी. बी. रोड, सहरसा बिहार	**श्री श्रवण कुमार मोहनका** मे. जीवन मेडीकल एजेन्सी बगांली बाजार, सहरसा बिहार	**श्री दिलीप कुमार खेतान** मे. अमित टेक्सटाईल्स बलवा हाल्ट, सहरसा बिहार	**श्री विजय कुमार सुल्तानियाँ** कृष्णा नगर पुरानी टेल, वार्ड नं.-२२ सहरसा, बिहार
श्री नंदलाल अग्रवाल रमेश झा रोड, वार्ड नं.-१९ गंगजाल, सहरसा, बिहार	**श्री अभिमन्यु सोनु** मे. बंसल वर्क्स धर्मशाला रोड, सहरसा बिहार	**श्रीमती अनसुईया देवी मस्करा** द्वारा - जय करण दास स्टेशन रोड, सहरसा बिहार	**श्री राजेश कुमार अग्रवाल** युगल चौक, सहरसा बिहार	**श्री कृष्णा कुमार अग्रवाल** मे. शाह सिमेन्ट सेन्टर त्रिवेणीगंज, बिहार
श्री दिपक कुमार अग्रवाल हाई स्कूल रोड त्रिवेणी गंज, बिहार	**श्री गोविन्द चिरानियाँ** लानउना रोड त्रिवेणीगंज, बिहार	**श्री पंकज कुमार अग्रवाल** मे. चंदन ट्रेडर्स त्रिवेणीगंज, बिहार	**श्री अनिल कुमार** मे. गीता ड्रेसेज स्थान चौक, मेन रोड त्रिवेणीगंज, बिहार	**श्री मुरारीलाल जगनानी** विश्वनाथ नगर रोड नं. १, बेगुसराय बिहार
श्री आनंद कुमार अग्रवाल चेतन प्रकाश, ईको वेनुअर्स बेगुसराय, बिहार	**श्री सुमित कुमार रूँगटा** मे. सुमित हैण्डलूम मेन रोड, बेगुसराय, बिहार	**श्री विकाश कुमार लोसल्का** रोड नं.-१, विश्वनाथ नगर बेगुसराय, बिहार	**श्री महेश कुमार मेंगोतिया** मे. स्टैंडर्ड एजेन्सी, कर्पुरी स्थान चौक, बेगुसराय, बिहार	**श्री नारायण मस्करा** मारवाड़ी मोहल्ला, गौशाला रोड, बेगुसराय, बिहार
श्री कृष्ण कुमार रूँगटा मे. हनुमान चारा सेन्टर छोटी रोड, बेगुसराय, बिहार	**श्री अरुण कुमार मेंगोतिया** घी गली, मारवाड़ी मोहल्ला बेगुसराय, बिहार	**श्री जगमोहन मेंगोतिया** घी गली, मारवाड़ी मोहल्ला बेगुसराय, बिहार	**श्री निखिल जैन** मे. एस. एस. कलेक्शन के.एन.मार्केट, मेन रोड, बेगुसराय, बिरार	**श्री राज कुमार हिसारिया** पप्पु कोल्ड स्टोरेज बेगुसराय, बिहार
श्री अमित कुमार हिसारिया मारवाड़ी मोहल्ला बेगुसराय, बिहार	**श्री रवि कुमार अग्रवाल** मे. रवि किशन एण्ड कार्पोरेशन, शितला माता गली, बेगुसराय, बिहार	**श्री यश हिसारिया** मे. प्लेनेट फैशन, काली स्थान चौक, बेगुसराय, बिहार	**श्री श्रवण टिबड़ेवाल** मे. नारायण कं. बेगुसराय, बिहार	**श्री ओम प्रकाश टिबड़ेवाल** मे. नारायण कं. बेगुसराय, बिहार
श्री ब्रिज मोहन टिबड़ेवाल मे. डॉवर शाप, मेन रोड बेगुसराय, बिहार	**श्री दिलीप शर्मा** चित्रावणी सिनेमा बेगुसराय, बिहार	**श्री कृष्ण गोपाल अग्रवाल** मेन रोड, बेगुसराय बिहार	**श्री रमेश कुमार खेतान** मे. खेतान ब्रदर्श, विष्णु पथ, मेन रोड, बेगुसराय, बिहार	**श्री मुरारी कुमार खेतान** मे. मुरारी इंटरप्राईजेज विष्णुपुर बाजार, बेगुसराय बिहार
श्री रवि कुमार शर्मा श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन हीरालाल चौक, बेगुसराय, बिहार	**श्री पवन कुमार अग्रवाल** मे. अग्रवाल ब्रोकर्स, गौशाला रोड, बेगुसराय, बिहार	**श्री अतुल अग्रवाल** मे. श्री बालाजी फर्मास्युटिकल, बेगुसराय, बिहार	**श्री गोपाल केडिया** मे. श्री प्रणामी प्लाई, नौरंगा, बेगुसराय, बिहार	**श्री सुमित कुमार अग्रवाल** मे. सरस्वती इंवेस्टमेंट - कालेजीयेट स्कुल रोड बेगुसराय, बिहार
श्रीमती ममता मस्करा मे. रवि मेडिको, कर्पुरी स्थान चौक, बेगुसराय, बिहार (१९०)	**श्री अनुप कुमार खेतान** मे. ओम फैंसी स्टोर अमला टोली, बक्सर, बिहार	**श्री अजय खेतान** मे. ओम फैंसी स्टोर अमला टोली, बक्सर, बिहार	**श्री संदीप कुमार अग्रवाल** मे. श्री श्याम खादी भण्डार अम्बेडकर चौक, बक्सर, बिहार	**श्री प्रवीण कुमार मानसिंघका** गंगा भवन, गजाधरगंज बक्सर, बिहार
श्री प्रकाश पोद्दार मे. गणेश अप्टिकल्स बक्सर, बिहार	**श्री अमित अग्रवाल** मे. गर्ग सेनिटेशन स्टेशन रोड, बक्सर, बिहार	**श्री सौरभ बजाज** ज्योति चौक, बक्सर बिहार	**श्री सुरेश कुमार भौतिका** मे. आनंद टाईल्स एण्ड मार्बल्स, आदर्श नगर, बक्सर, बिहार	**श्री रूपक मानसिंघका** स्टेशन रोड, बक्सर बिहार
श्री राजेश कुमार भौतिका मे. आनंद इलेक्ट्रिकल्स बक्सर, बिहार	**श्री महेश कुमार भौतिका** मे. आनंद टाईल्स एण्ड मार्बल्स, आदर्श नगर, बक्सर, बिहार	**श्री विनोद कुमार शर्मा** मे. मालवी आयुर्वेदिक औषधालय, डुमरॉव रोड, बक्सर, बिहार	**श्री अजय कुमार टिबड़ेवाल** द्वारा - बालाजी किराना पुपड़ी बाजार, सीतामढ़ी, बिहार	**श्री शिव कुमार बागला** मे. श्री महावीर आयल भण्डार, सीतामढ़ी, बिहार

सम्मेलन में नए सदस्यों का स्वागत!

आजीवन सदस्य

श्री ब्रिजेश कुमार बुबना स्टेशन रोड, बाटा गली सीतामढ़ी, बिहार	**श्री सुशील कुमार केजरीवाल** मारवाड़ी स्कुल, जनकपुर रोड, पुपड़ी, सीतामढ़ी, बिहार	**श्री श्याम बिहारी केजरीवाल** वार्ड नं. - ६, गोपाल धर्मशाला सीतामढ़ी, बिहार	**श्री विक्रम जालान** मे. ममता ड्रेसेज, स्टेशन रोड, सीतामढ़ी, बिहार	**श्री कृष्णा जालान** मे. वर वधू, बाटा गली पुपड़ी बाजार, सीतामढ़ी, बिहार
श्री विकास कुमार द्वारा - सति ट्रेडर्स बाटा गली, सीतामढ़ी बिहार	**श्री अशोक बाजोरिया** मे. नमस्कार, लोहापट्टी, पुपड़ी बाजार, सीतामढ़ी, बिहार	**श्री कृष्ण कन्हैया मित्तल** मे. श्री कन्हैया स्टोर्स, पुपड़ी सीतामढ़ी, बिहार	**श्री केदारनाथ माधोगढ़िया** माधोगढ़िया निवास सुपौल, बिहार	**श्री नवीन कुमार भण्डार** मे. शाखा वस्त्रालय गणपतगंज, सुपौल, बिहार
श्री निरज कुमार सराफ कदम तल्ला, गणपतगंज सुपौल, बिहार	**श्रीमती सरिता अग्रवाल** गणपतगंज, सुपौल बिहार	**श्रीमती सोनम अग्रवाल** गणपतगंज, सुपौल बिहार	**श्री मुकुल अग्रवाल** गणपतगंज, सुपौल बिहार	**श्री दीपक कुमार मोहनका** मे. नरसिंघ जनरल स्टोर्स गणपतगंज, सुपौल, बिहार
श्री संतोष अग्रवाल मे. जगदीप कुमार अग्रवाल गणपतगंज, सुपौल, बिहार	**श्रीमती टीना अग्रवाल** गणपतगंज, सुपौल बिहार	**श्री विनीत खजांची** गणपतगंज, सुपौल बिहार	**श्री अमित कुमार अग्रवाल** मे. अग्रवाल मेडिकल हाल गणपतगंज, सुपौल, बिहार	**श्रीमती सुजाता अग्रवाल** मे. अग्रवाल मेडिकल हाल गणपतगंज, सुपौल, बिहार
श्री नरेन्द्र कुमार खजांची मे. खजांची वस्त्रालय गणपतगंज, सुपौल, बिहार	**श्री सौरभ कोठारी** गणपतगंज, सुपौल बिहार	**श्री मथुरा प्रसाद बजाज** द्वारा – मनभावन रेडीमेड टावर चौक, दरभंगा, बिहार	**श्रीमती आशा देवी खेड़िया** मे. अन्नपुर्णा ड्रेसेज, बड़ा बाजार, गांधी चौक दरभंगा, बिहार	**श्री ओम प्रकाश लिल्हा** गांधी चौक, दरभंगा बिहार
श्री विनय कुमार शर्मा मे. कृष्णा शु स्टोर दरभंगा, बिहार	**श्री दिपक कुमार सराफ** गांधी चौक के नजदीक दरभंगा, बिहार	**श्री पवन शर्मा** ग्रा.+पो. - कमतौल दरभंगा, बिहार	**श्री विनोद कुमार लिल्हा** मे. जैन ट्रेडर्स, दरभंगा बिहार	**श्री प्रमोद कुमार लिल्हा** मे. सुमित्रा एण्ड संस दरभंगा, बिहार
श्री अरूण कुमार लिल्हा ग्रा.+पो. - कमतौल दरभंगा, बिहार	**श्री उमा शंकर जयपुरिया** मे. उमाशंकर जनरल स्टोर समस्तीपुर, बिहार	**श्री कृष्ण कुमार टिबड़ेवाल** विथान, समस्तीपुर बिहार	**श्री प्रदीप कुमार सिंघी** ग्रा.+पो. - विथान समस्तीपुर, बिहार	**श्री पुरूषोत्तम लाल झुनझुनवाला** ग्रा.+पो. - विथान समस्तीपुर, बिहार
श्री मनोज कुमार ग्रा.+पो. - विथान समस्तीपुर, बिहार	**श्री वासुदेव शर्मा** विथान बाजार समस्तीपुर, बिहार	**श्री जय प्रकाश टिबड़ेवाल** ग्रा.+पो. - विथान समस्तीपुर, बिहार	**श्री विजय कुमार टिबड़ेवाल** द्वारा - रामेश्वर लाल विथान, समस्तीपुर, बिहार	**श्री पन्ना लाल सराफ** ग्रा.+पो. - विथान समस्तीपुर, बिहार
श्री सुजित कुमार बाजोरिया मे. मनोज जनरल स्टोर्स विथान बाजार, समस्तीपुर, बिहार	**श्री अरूण कुमार छापड़िया** ग्रा.+पो. - विथान समस्तीपुर, बिहार	**श्री मनोज अग्रवाल** वार्ड नं.-१६, स्टेशन रोड रोसड़, बिहार	**श्री पवन कुमार अग्रवाल** नारायण पिपर, पनशाला बेगुसराय, बिहार	**श्री सुशील कुमार चौधरी** काशी प्रसाद, मदन लाल रोसड़, बिहार
श्री प्रदीप कुमार शर्मा लोहिया नगर, रोसड़ बिहार	**श्री बजरंग अग्रवाल** नारायण पिपर, पानशाला बेगुसराय, बिहार	**श्री शेखर कुमार चौधरी** बड़ी काली स्थान, वार्ड नं.-१२ समस्तीपुर, बिहार	**श्री मनीष कुमार गुप्ता** वार्ड नं.-१६, स्टेशन रोड समस्तीपुर, बिहार	**श्री दिलीप कुमार शर्मा** लोहिया नगर पंचायत - वार्ड नं.-५, समस्तीपुर बिहार
श्री जय प्रकाश गुप्ता वार्ड नं.-१८, लक्ष्मीपुर समस्तीपुर, बिहार	**श्री बिनोद कुमार मुंशी** वार्ड नं.-१४, समस्तीपुर बिहार	**श्री पियुष अग्रवाल** ग्रा.-पिपड़ी, पो.-जीयाराम राधोपुर, बिहार	**श्रीमती दीपा अग्रवाल** ग्रा.-पिपड़ी, पो.-जीयाराम राधोपुर, बिहार	**श्री संजय कुमार अग्रवाल** मे. धनलक्ष्मी इंटरप्राईजेज राधोपुर, बिहार
श्रीमती समता देवी ग्रा.-दुर्गापुर, पो.-जीयाराम राधोपुर, बिहार	**श्रीमती कंचना देवी** ग्रा.-दुर्गापुर, पो.-जीयाराम राधोपुर, बिहार	**श्री राम गोपाल अग्रवाल** ग्रा.-दुर्गापुर, पो.-जीयाराम राधोपुर, बिहार	**श्रीमती उर्मिला देवी** ग्रा.-दुर्गापुर, पो.-जीयाराम राधोपुर, बिहार	**श्रीमती सुधा माधोगढ़िया** ग्रा.-दुर्गापुर, पो.-जीयाराम राधोपुर, बिहार
श्री सुनील कुमार माधोगढ़िया ग्रा.-दुर्गापुर, पो.-जीयाराम राधोपुर, बिहार	**श्रीमती नीलम देवी** ग्रा.-दुर्गापुर, पो.-जीयाराम राधोपुर, बिहार	**श्रीमती मंजु देवी** ग्रा.-दुर्गापुर, पो.-जीयाराम राधोपुर, बिहार	**श्रीमती शरला माधोगढ़िया** ग्रा.-दुर्गापुर, पो.-जीयाराम राधोपुर, बिहार	**श्री बलराम लुहारूका** राजेन्द्र रोड, बरौनी बिहार

सम्मेलन में नए सदस्यों का स्वागत!

आजीवन सदस्य

श्री नंद किशोर लुहारूका दीन दयाल रोड, बरौनी बिहार	**श्री अनील कुमार मुरारका** चिल्लई घाट, बरौनी बिहार	**श्री अमीत खेतान** मे. अभिनंदन स्टोर्स, मेन रोड, सिमरही बाजार, बिहार	**श्रीमती सुषमा पंसारी** सिमराही बाजार बिहार	**श्रीमती नेहा माधोगढ़िया** मे. सचिन ब्रिक्स, सिमराही बाजार, बिहार
श्रीमती सरीता माधोगढ़िया मे. सचिन ब्रिक्स, सिमराही बाजार, बिहार	**श्रीमती रिंकी माधोगढ़िया** मे. ज्योति ब्रिक्स सिमराही बाजार, बिहार	**श्री संदीप कुमार पंसारी** मे. रिया प्लाई एण्ड हार्डवेयर, रामनगर रोड, सिमराही बाजार, बिहार	**श्री गोपी हरलालका** मे. पंकज वस्त्रालय सिमराही बाजार, बिहार	**श्रीमती रोमी चंद** मे. अपना घर सिमराही बाजार, बिहार
श्री राम कृष्ण गोयल मे. कृष्णा साड़ी हाउस कलाली गली, भागलपुर, बिहार	**श्री प्रकाश कुमार डोकानियाँ** मे. मन्टु मेडिकल हाल भागलपुर, बिहार	**श्री अजय कानोड़िया** श्याम मंदिर गली भागलपुर, बिहार	**श्री नितीन भावनका** मारवाड़ी टोला लेन भागलपुर, बिहार	**श्री अजय कुमार सिंघानिया** पो.- सालमारी जिला- कटिहार, बिहार
श्री दीपक कुमार अग्रवाल मे. बालाजी इंटरप्राईजेज पो.- सालमारी, कटिहार बिहार	**श्री संदीप कुमार अग्रवाल** मे. ओम प्रकाश अग्रवाल पो. सालमारी, कटिहार, बिहार	**श्री कन्हैया लाल अग्रवाल** मे. एस. एम. ट्रेडर्स पो.-सालमारी, जिला- कटिहार, बिहार	**श्री ओम प्रकाश सराफ** वार्ड नं.-२४, चर्म रोग बेतियां, बिहार	**श्री सुशील कुमार रूँगटा** वार्ड नं.-२४, लाल बाजार बेतिंया, बिहार
श्री अशोक कुमार रूँगटा वार्ड नं.-२४, बेतिंया बिहार	**श्री प्रेम कुमार सोमानी** लाल बाजार बेतिंया, बिहार	**श्री गोविन्द कुमार अग्रवाल** सुर्या सिनेमा कैम्पस, वार्ड नं.-२३, बेतिंया, बिहार	**श्री सुशील अग्रवाल** १५, आर्य कुमार रोड राजेन्द्र नगर, पटना बिहार	**श्री रतन झुनझुनवाला** मे. आशोक साड़ी सेन्टर लाल बाजार, बेतिंया बिहार
श्री अशोक जैन मे. श्री बालाजी टेलीकाम लाल बाजार, बेतिंया, बिहार	**श्री रवि कुमार जैन** मे. बालाजी कलर स्टोर लाल बाजार, बेतिंया, बिहार	**श्री अलोक कुमार मोरानी** भवन निर्माण, लाल बाजार बेतिंया, बिहार	**श्री महेश कुमार शर्मा** चौधरी टोला, शनी मंदिर कहलगाँव, भागलपुर, बिहार	**श्री दीपक टेकरीवाल** चौधरी टोला, कहलगाँव भागलपुर, बिहार
श्री महावीर प्रसाद तम्बाकुवाला मे. रानीसति सॉ मिल काजीपुरा, कहलगाँव, बिहार	**श्री भरत कुमार खेतान** गांधी नगर, वार्ड नं.-९ कहलगाँव, भागलपुर, बिहार	**श्री महेश कुमार रूँगटा** पुरानी बाजार, कहलगाँव भागलपुर, बिहार	**श्री अजय कुमार अग्रवाल** मे. बालाजी मोटर साईकिल मेन रोड, रक्सौल, बिहार	**श्री कमल कुमार अग्रवाल** मे. पी. के. अग्रवाल मेडिकल मीना बाजार, रक्सौल, बिहार
श्री नंद किशोर हेडा १५-२-२००, महाराजगंज़ हैदराबाद, तेलंगाना	**श्री श्रीकान्त ईनानी** मे. ईनानी एण्ड कं. २.१.४४, टोबैको बाजार सिकन्दराबाद, तेलंगाना	**श्री श्रीगोपाल बंग** २०.२.५४, ओल्ड कासुतान खान, हैदराबाद, तेलंगाना	**श्री कृष्ण गोपाल मनियार** ३-४-८६०, हर्षधाम अपार्टमेंट, बरकानपुरा, हैदराबाद, तेलंगाना	**श्री कृष्ण चंद्र बंग** २-२-६०, पान बाजार सिकन्दराबाद, तेलंगाना
श्री चैन सुख काबरा २५/ए, आई डी ए, बाला नगर, हैदराबाद तेलंगाना	**श्री पुरूषोत्तम मनधाना** ७-१-२१४/१/ए, डी.के. रोड अमीरपेट, हैदराबाद, तेलंगाना	**श्री संदीप झँवर** ५११, रघवा रतना टावर चिराग अली लेन, हैदराबाद, तेलंगाना	**श्री द्वारका प्रसाद आस्वा** ५११, रधवा रतना टावर चिराग अली लेन, हैदराबाद, तेलंगाना	**श्री अमित झँवर** कोटक महिन्द्र बैंक लि. नव भारत चैम्बर सोमजी हैदराबाद, तेलंगाना
श्री प्रवीण बिजयवर्गीय मे. द ए.पी. महेश के. ओ. ५-३३-९८९, तीसरा तल हैदराबाद, तेलंगाना	**श्री विनोद कुमार राठी** ४-२-१०६९, जी-६, वैभव अपार्टमेंट, रामकोटे, हैदराबाद, तेलंगाना	**श्री रामनिवास आस्वा** ३-५-१२१/ई/१/४, इडेन बाग किंग कोठी, हैदराबाद, तेलंगाना	**श्री प्रदीप चाण्डक** ३-२-४६६/२, चप्पल बाजार कचीगुड़ा, हैदराबाद, तेलंगाना	**श्री विजय कुमार काबरा** फ्लैट नं.-४०१, ३/४/ ११३/१ सरस्वती रेसीडेन्सी, बरकतपुरा, हैदराबाद, तेलंगाना
श्री गोपाल लाल आस्वा ३-५-११०, रामकोटे हैदराबाद, तेलंगाना	**श्री नारायण दास शारदा** १५-७-६४६/१४, द्वितीय तल, बेगम बाजार, हैदराबाद, तेलंगाना	**श्री घनश्याम दास बंका** २०-१-२४२, कोक बाजार पुराना पुल, हैदराबाद, तेलंगाना	**श्री राजेन्द्र कुमार झँवर** १४-२-३३२/१९/१, ज्ञान बाग कालोनी, हैदराबाद, तेलंगाना	**श्री रितेष अग्रवाल** विलर नं.-१३३, सनराईज वैली, अपर पल्ली, हैदराबाद, तेलंगाना
श्री विजय कुमार जाजु २०-२-२३२ कबूतरखाना हैदराबाद, तेलंगाना	**श्री हरिप्रसाद कालिया** १५-७-६४६/१७, नसीब कम्पलेक्स, बेगम बाजार हैदराबाद, तेलंगाना	**श्री राजेन्द्र प्रसाद बंग** १-१-५१४, न्यु बंकराम गांधीनगर, हैदराबाद तेलंगाना	**श्री विजय बजाज** १००ए, मेपाल टाउन सनसिटी, अट्टापुर, हैदराबाद तेलंगाना	**श्री पवन अट्टल** फ्लैट नं. ३०२, श्रेयान नेक्सर अपार्टमेंट, अट्टापुर हैदराबाद, तेलंगाना
श्री दिनेश कुमार बंग ३-४-८०९/बी, बरकतपुरा हैदराबाद, तेलंगाना	**श्री रूपेश सोनी** ३-५-३५२, ओसमान प्लाजा रोड नं.-१, बंजारा हिल्स हैदराबाद, तेलंगाना	**श्री सुरेश चंद भट्टड़** १६-२-१४७/६५, सांई विराट अपार्टमेंट, मलकपेट, हैदराबाद, तेलंगाना	**श्री राजेश व्यास** १५-७-२१६, जटाशंकर बिल्डिंग, बेगम बाजार, हैदराबाद, तेलंगाना	**श्री मधुसुदन बंसल** १-२-४७/१ एवं २, टी एन आर वैश्नवी, डोमलगुड़ा, हैदराबाद, तेलंगाना

सम्मेलन में नए सदस्यों का स्वागत!

आजीवन सदस्य

श्री रमेश चन्द्र लाहोटी ४-३-५६८/१, तिलक रोड, हैदराबाद, तेलंगाना	**श्री रामदेव कारवाँ** १-२-५००/२, श्यामा बिल्डिंग, हैदराबाद, तेलंगाना	**श्री विष्णु प्रकाश राठी** ४-७-३८२/५, इस्मिया बाजार, हैदराबाद, तेलंगाना	**श्री बासना दलिया** ४-७-४३९, इस्मिया बाजार, हैदराबाद, तेलंगाना	**श्री हनुमान दास शारदा** २०-३-६७६, टैगोरी का नाका, गोलागली, हैदराबाद, तेलंगाना
श्री राजेन्द्र कुमार हेडा ५-३-९८९, शेरजा इस्टेट ओसमानगंज, हैदराबाद, तेलंगाना	**श्री महेश कुमार बंग** ३-५-१११२, राज मोहल्ला नारायणजुदा, हैदराबाद, तेलंगाना	**श्री राजेश कारवाँ** १०३, माधवी टावर रामबाग, हैदराबाद, तेलंगाना	**श्री सत्य प्रिया जाजू** ४-७-१५४/२५, पांडुरंगा नगर, अन्नापुर, हैदराबाद, तेलंगाना	**श्री नरसिंग दास शारदा** ४-९-९२४, फ्लैट नं.-१७७/डी, हुदा कालोनी, अट्टापुर, हैदराबाद, तेलंगाना
श्री रमेश लड्ढाड १९-२-१४३/१, नरसरेड्डी कालोनी, आई.टी.आई रोड, हैदराबाद, तेलंगाना	**श्री गोपाल लाल तपाड़िया** ४-९-१२५/३७९, हुदा कालोनी, हैदराबाद, तेलंगाना	**श्री अनूप चाण्डक** ३-३-५५० से ५५८/बी मात्रा करूपा, हैदराबाद, तेलंगाना	**श्री उमेश शर्मा** १४-२-३९६/१, रज्जाकपुरा हैदराबाद, तेलंगाना	**श्री लक्ष्मीनारायण राठी** १५-७-४१९/२, बेगम बाजार हैदराबाद, तेलंगाना
श्री हरि किशन बंग फ्लाट नं.-१७, अवंत हैदराबाद, तेलंगाना	**श्री जगदीश दराक** मे. श्री निर्मला फर्मा ८-३-६०, द्वितीय बाजार सिकन्दराबाद, तेलंगाना	**श्री श्याम सुन्दर बजाज** मे. श्री रबर कं., ५-५-८९/८५, द्वितीय तल, रानीगंज, सिकन्दराबाद, तेलंगाना	**श्री घनश्याम दास संवर** ७-२-१०२९, स्टेशन रोड सिकन्दराबाद, तेलंगाना	**श्री लक्ष्मीनिवास मुंदरा** फ्लाट नं.-२४, लक्ष्मीगुंटी कालोनी, रस्सलूपुरा, सिकन्दराबाद, तेलंगाना
श्री वल्लभ दास सिकची फ्लाट नं.-३, बापूजी नगर वारांगल राईस स्टोर सिकन्दराबाद, तेलंगाना	**श्री भगवान दास आर तिवाड़ी** फ्लैट नं.-९०३, नौवाँ तल कावा डिगुदा, हैदराबाद, तेलंगाना	**श्री पुरुषोत्तम दास सिकची** १-३-१७६/३५/२२/८ए, सांईराम निवास, हैदराबाद, तेलंगाना	**श्री बद्रीविशाल मुँदड़ा** फ्लैट नं.-१०२, डी.सी. हाउस, सिकन्दराबाद, तेलंगाना	**श्री घनश्याम दास राठी** ८-५-१४५/ए, फ्लाट नं.-९५ सिकन्दराबाद, हैदराबाद, तेलंगाना
श्री घनश्याम दास बजाज १५-३-९२, गोवली गुदा चमन बेगम बाजार, हैदराबाद, तेलंगाना	**श्री सुभाष अग्रवाल** फ्लैट नं.-४०६, वेस्ट ब्लाक स्ट्रीट नं.-१, साता नगर हैदराबाद, तेलंगाना	**श्री मुकेश आर जैन** मे. मुथा बैंगल्स, ४०, के.वी. एस. सेठी स्ट्रीट भेल्लौर, तमिलनाडू	**श्री श्याम मुरारीलाल** अग्रवाल रेसीडेन्सी ३७३, मेन बाजार, भेल्लौर तमिलनाडू	**श्री प्रकाश चंद जैन** मे. महावीर बैंगल्स स्टोर नं.-१०/१, बी.के. सेठी स्ट्रीट, भेल्लौर, तमिलनाडू
श्री अजय अग्रवाल मनीष मेनशन, २३८, गांधी रोड, भेल्लौर, तमिलनाडू	**श्री नारायण अग्रवाल** मनीष मेनशन, २३८, गांधी रोड, भेल्लौर, तमिलनाडू	**श्री गोविन्द प्रसाद** न्यु नं.-एफ ६६, अन्ना नगर ईस्ट, चेन्नई, तमिलनाडू	**श्री श्याम सुन्दर दमानी** नं.-२, (ओल्ड नं.-१८) सिनोटा नगर ईस्ट चेन्नई, तमिलनाडू	**श्री अनुराग माहेश्वरी** एच-१९८५, अन्नानगर चेन्नई, तमिलनाडू
श्री मुरारी लाल सोंथलिया एफ-४२/६६, अन्नानगर चेन्नई, तमिलनाडू	**श्री राहुल टिबड़ेवाल** नं.-२२३४, ए. एफ. ब्लाक अन्नानगर वेस्ट, चेन्नई तमिलनाडू	**श्री प्रवीण कुमार तुलस्यान** मे. विपुल आडियो टेक १९५/२८७, किलपार्क गार्डन रोड, चेन्नई, तमिलनाडू	**श्री रविन्द्र गुप्ता** शकुन्तला निवास ३७२/२, चौथा मेन रोड चेन्नई, तमिलनाडू	**श्री जय प्रकाश अग्रवाल** शिव चंदर कुंज २७, अम्बेडकर स्ट्रीट, चेन्नई, तमिलनाडू
श्री वेदान राज लोहिया वृंदावन इनक्लेव चेन्नई, तमिलनाडू	**श्री ब्रिज खण्डेलवाल** इलेक्ट्रो हाउस नं.-२३ रामानाथन स्ट्रीट, चेन्नई तमिलनाडू	**श्री रामकिशन अग्रवाल** मे. श्री अग्रसेन स्टील इंड प्रा. लि., ९, सेमबुडोस स्ट्रीट, चेन्नई, तमिलनाडू	**श्री संतोष कुमार साह** मे. महाकाली स्टील इंट-रप्राईजेज, २२, सेमबुडोस स्ट्रीट, चेन्नई, तमिलनाडू	**श्री आशिष मुँधड़ा** मे. मुँधड़ा बुलियन प्रा. लि. ८३, एन.एस.सी. बोस रोड चेन्नई, तमिलनाडू
श्री जयन्ती लाल जे. चल्लानी नं.-१९/१, रघविया रोड टी. नगर, चेन्नई, तमिलनाडू	**श्री ओम प्रकाश घुरका** ९७/३६, गोडाउन स्ट्रीट चेन्नई, तमिलनाडू	**श्री नरेन्द्र कुमार सिंगला** १७५, ईवर लेन, किलपौक चेन्नई, तमिलनाडू	**श्री गौरव कुमार सिंगला** १७५, ईवर लेन, किलपौक चेन्नई, तमिलनाडू	**श्री सुरेश कुमार अग्रवाल** मे. भगवती दास कं. - ४६, सेमबुडोस स्ट्रीट चेन्नई, तमिलनाडू
श्री हितेष कानोड़िया नं.-६, ए.ई. ब्लाक, साँतवा तल, चेन्नई, तमिलनाडू	**श्री साँवरमल खेमका** मे. स्वास्तिक पाईप्स तोंदीयारपेट, चेन्नई तमिलनाडू	**श्री नरहरि प्रसाद चौधरी** ३२५, पुनामली हाई रोड अम्माजीकेयर, चेन्नई तमिलनाडू	**श्री अनिल कुमार घुरका** ५६/३४, रिथरडॉन रोड भेपेरी, चेन्नई, तमिलनाडू	**श्री मधुसुदन घुरका** मनीभद्रा इंक्लेव १२१, अन्नापिल्लई स्ट्रीट चेन्नई, तमिलनाडू
श्री भीमा राम मे. लक्ष्मी वोडी फर्निचर नं.-१६/५, टोटलर्स स्ट्रीट चेन्नई, तमिलनाडू	**श्री कैलाश सोड़ानी** मे. पारसमनी मार्वल्स प्रा. लि. तालुका सोलागिरी, तमिलनाडू	**श्री मुकेश कुमार गुप्ता** मे. महेश स्टील ट्रेडर्स नं.-७० (३६), सेमबुडोस चेन्नई, तमिलनाडू	**श्री अमित अग्रवाल** नं.-११२, अन्नापिल्लई स्ट्रीट, चेन्नई, तमिलनाडू	**श्री संजय गोयल** मे. द पर्ल स्टोन ४९३, ईनर रिंग रोड चेन्नई, तमिलनाडू
श्री श्रवण अग्रवाल २१, कल्याणी इंडस्ट्रीयल ईस्टेट अम्बाट्टुर, वेनेग्राम रोड चेन्नई, तमिलनाडू	**श्री श्रवण कुमार हिम्मतसिंहका** ब्लाक-१, ७ई, ब्रिकलीन रोड, चेन्नई, तमिलनाडू	**श्री अनिरूद्ध खेमका** वाई-२०२, अन्नानगर चेन्नई, तमिलनाडू	**श्री अर्चित खेमका** वाई-२०२, अन्नानगर चेन्नई, तमिलनाडू	**श्री मधुसुदन खेमका** मे. रेगन पॉवरटेक प्रा. लि. शिनॉय नगर, चेन्नई, तमिलनाडू

S R RUNGTA GROUP
R
Rungta Mines Limited
Chaibasa
RUNGTA STEEL™
SOLID STEEL
• Superior Technology
• Greater Strength
• Extreme Flexibility
500D
TMT REBARS
STEEL DIVISION
RUNGTA CHAMBERS
S.M.H.M.V. COMPLEX, CHAIBASA -833201
WEST SINGHBHUM, JHARKHAND, INDIA
Contact :
+91-6582-255261/ 361
+91-7008-012240
tmtmkt@rungtamines.com
csp@rungtamines.com
Approved by
IS 1786:2008
ISI
Lic.No.-CM/L
5800021706
Approved by
IS 2830:2012
ISI
Lic.No.-CM/L
5800007712

TUBEROSE

Kolkata's leading stevedoring and shipping logistics company

Areas of expertise include -

MANAGEMENT OF PULSES

BARGING

STEVEDORING

SHORE AND PORT EQUIPMENTS

STEAMER AGENCY

VARIED LOGISTICS AND SHIPPING EXPERIENCE

TUBEROSE LOGISTICS PVT LTD | 3B CAMAC STREET | KOLKATA 700016 | 9830261566 / operations@tuberoselogistics.com

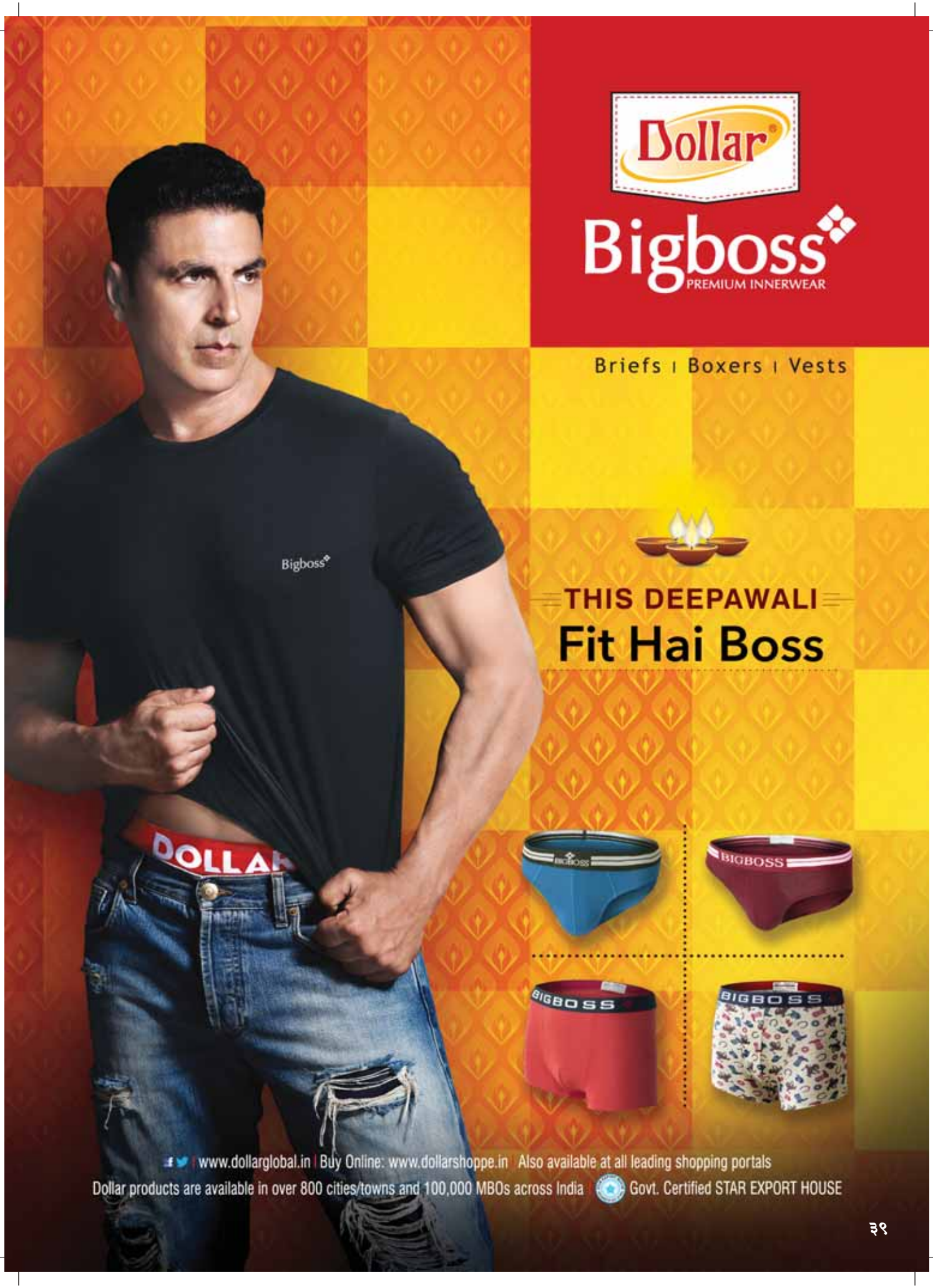

Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Briefs | Boxers | Vests
THIS DEEPAWALI
Fit Hai Boss
www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at all leading shopping portals
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2018-2020
Date of Publication - 30th October 2019
RNI Regd. No. 2866/1968

LIFE BEGINS AT 60!

JAGRITI DHAM

KOLKATA'S MOST COMPREHENSIVE HOME FOR SENIOR LIVING

Yoga & meditation

Wellness spa

Indoor games

Outdoor activities

COMFORTS & CONVENIENCES
- Furnished and fully-serviced AC rooms
- Attached toilet, pantry and balcony
- Housekeeping and maintenance on call
- Wi-fi, Intercom

Privilege access to IBIZA Club

24 x 7 Medical care

Mandir

Safety and Security

SENIOR-FRIENDLY
- Wheel chair and walker-enabled spaces and ramps
- Spacious lifts to accommodate stretchers
- Specially designed bathrooms with wheel chair-accessible showers

- Inside Merlin Greens complex
- Adjacent to Ibiza on Diamond Harbour Road
- Near Bharat Sevasram Hospital and Swaminarayan Dham Temple
- 5 kms from Nature Cure and Yoga Research Institute

SECURITY
- 24 hours manned gate with intercom
- Electronic surveillance, CCTV
- Power back-up

HEALTHCARE
- 24x7 ambulance, attendant
- Visiting doctors, specialists-on-call
- Emergency button in every room and frequently occupied areas
- Tie-ups with the city's best nursing homes and hospitals

SAFETY ACTIVITY COMMUNITY SPIRITUALITY

Supported by infinity

Jagriti Dham, Merlin Greens, IBIZA Club, Diamond Harbour Road, Pin 743 503
contact@jagritidham.com | www.jagritidham.com | 88 200 22022

From :
All India Marwari Federation
4B, Duckback House
41, Shakespeare Sarani, Kolkata-17
Phone : (033) 4004 4089
E-mail : aimf1935@gmail.com